SACHCHA RAHI • ISSN 2582-4007 • VOL 24 • ISSUE 07 • SEPTEMBER 2025

हिन्दी मासिक सितम्बर 2025

सच्चा राही

लखनऊ

मुबारक दिन और मुबारक इंसान

आदम की औलाद पर आदम के किसी बेटे का ऐसा एहसान नहीं जैसा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दुनिया के इंसानों पर है, जिनकी आमद से दुनिया का रुख पलट गया, दुनिया का ज़मीर जाग गया, अच्छे बुरे का एहसास होने लगा, ख़ुदा की बन्दग़ी का रास्ता खुल गया, गरज़ देखते देखते दुनिया बदल गई।

12 रबीउल अव्वल का दिन मुबारक क्यों न हो, कि आज ही के दिन दुनिया का सबसे मुबारक इंसान पैदा हुआ जिसने इस दुनिया को नया ईमान और नया जीवन प्रदान किया।

(हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी)

एक प्रति ₹40/=
वार्षिक ₹400/=

सरपरस्त
हज़रत मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी
नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक
मु0 गुफ़रान नदवी
उप सम्पादक
जमाल अहमद नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
समय: (8:00 am to 1:00 pm)
Mob. 7348339655
0522-2740406
E-mail:sachcharahi@nadwa.in
https://sachcha-rahi.nadwa.in/

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 40/-
वार्षिक	₹ 400/-
विदेशों में (वार्षिक) 60 यु.एस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ
SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007

सितम्बर 2025 वर्ष 24 अंक 07

आमिना का दुलारा

आमिना का दुलारा हमारा नबी।
सब की आंखों का तारा हमारा नबी।।
वह यतीमों,जईफों का फरयाद रस।
बेकसों का सहारा हमारा नबी।।
नक़्श पा से दरखशां हुआ रास्ता।
नूरे हक़ का मनारा हमारा नबी।।
उनके दर पे सलातीने आलम झुके।
अजमतों का शरारा हमारा नबी।।
उनके दम से मुनव्वर दो आलम हुए।
जलव–ए– आशकारा हमारा नबी।।
एक माबूद के दर पे आजाइए।
सिदक़ दिल से पुकारा हमारा नबी।।
है सरापा–ए– शफक़त, यकीनन वली।
रहमतों का है धारा हमारा नबी।।

(मौलाना वलीउल्ला वली कासमी बस्तवी)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक मोहम्मद ताहा अतहर द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Composing by: Qamaruzzama-8318047804

विषय एक दृष्टि में

कुरआन की शिक्षा	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0	07
इन्सानियत के मसीहा	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	08
समाज की बुराईयाँ	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	12
जब ज़ुबाँ पर मुहम्मद का नाम आ गया	हज़रत मौ0 शाह मु0 अहमद सा0 प्रतापगढ़ी	13
भारत के अतीत में मुस्लिम	सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान	14
हज़रत मुहम्मद सल्ल0	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	17
अच्छे व्यवहार की शिक्षा	मौलाना सैयद जलालुद्दीन उमरी	21
रोशन हमारा दिल है	बेखुद देहलवी	25
हज़रत ईसा अलै0 की पेशीनगोइयाँ	इं0 जावेद इक़बाल	26
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	29
अपनों से ग़ैर अच्छे कैसे मुम्किन!!	सै0 सुफ़यान अहमद नदवी लखनवी	30
उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ि0	मुहम्मद इक़बाल नदवी	34
एक इन्सान दो जिन्न	मायल ख़ैराबादी	36
वैवाहिक सम्बन्ध	शाहाना ख़ानम हैदराबाद	38
स्वास्थ्य	शालिनी वर्मा	40
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	अबू अब्दुर्रहमान नदवी	41
अहले ख़ैर हज़रात से	इदारा	42

कुरआन की शिक्षा

मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़ई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-नहलः-

अनुवादः—

और अल्लाह के अलावा वे ऐसों को पूजते हैं जो आसमानों और जमीन में उनकी रोजी के कुछ भी मालिक नहीं और न वह उनके बस में है(73) बस तुम अल्लाह के लिए मिसालें मत गढ़ो बेशक अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते[4](74) अल्लाह एक उदाहरण देता है (एक ओर) एक गुलाम है जो किसी की मिल्कियत (स्वामित्व) में है किसी चीज पर उसका बस नहीं और (दूसरी ओर) वह व्यक्ति है जिसको हमने खूब रोजी दी है तो वह छिप कर और खुलकर उसमें से खर्च करता रहता है क्या वे बराबर हो सकते हैं? प्रशंसा असल अल्लाह ही के लिए है लेकिन उनमें अधिकतर लोग जानते ही नहीं(75) और अल्लाह एक और उदाहरण देता है, दो आदमी हैं उनमें एक गूंगा है किसी चीज़ पर उसका बस नहीं और वह अपने स्वामी पर एक बोझ है, वह उसको जहां भी भेजता है वह कुछ भला करके नहीं लाता क्या यह व्यक्ति उस दूसरे आदमी के बराबर हो सकता है जो न्याय का आदेश देता है और वह खुद सीधी राह पर है(76) और आसमानों और ज़मीन का ढका छिपा अल्लाह ही के पास है और क़यामत का मामला तो बिल्कुल आँख झपकने की तरह है या उससे भी निकट, बेशक अल्लाह हर चीज पर पूरा सामर्थ्य रखता है(77) और अल्लाह ने तुमको अपनी मांओं के पेट से निकाला तुम कुछ जानते न थे और तुम्हारे लिए कान और आंखें और दिल बनाये ताकि तुम शुक्रगुजार (आभारी) रहो(78) क्या उन्होंने पक्षियों को आकाश की फिजा में काम पर लगे नहीं देखा, अल्लाह के अतिरिक्त कौन है जो उनको थामे हुए है? बेशक इसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो मानते हैं(79) और अल्लाह ही ने तुम्हारे घरों को तुम्हारे लिए सुकून का स्थान बनाया और तुम्हारे लिए चौपायों की खालों से ऐसे शिविर बनाए जो तुम्हें यात्रा के समय और डेरे डालते समय हल्के—फुल्के लगते हैं और उनके ऊन से और उनके रोएं से और उनके बालों से बहुत सारे घरेलू सामान और प्रयोग की ऐसी चीजें बनाई जो एक अवधि तक लाभ पहुंचाती हैं(80) और अल्लाह ने अपनी पैदा की हुई वस्तुओं से तुम्हारे लिए छांव बनाई और पहाड़ों में तुम्हारे छिपने के स्थान (बनाए) और तुम्हारे लिए ऐसे कुर्ते (बनाए) जो तुम्हें गर्मी से बचाते हैं और ऐसे कुर्ते भी जो तुम्हारे युद्ध में तुम्हारे बचाव का काम करते हैं, अल्लाह इसी प्रकार अपनी नेअ़मत तुम पर पूरी करता है कि शायद तुम आज्ञाकारी बन जाओ[2](81) फिर अगर वे मुंह फेरते हैं तो आपका काम तो साफ साफ पहुंचा देना ही है[3](82 वे अल्लाह के एहसान को जान कर फिर उससे अंजान बनते हैं और उनमें अधिकांश

नाशुक्रे हैं(83) और जिस दिन हम हर उम्मत (सम्प्रदाय) में से एक गवाह खड़ा करेंगे फिर काफिरों को न (माफी मांगने की) अनुमति दी जाएगी और न उनको तौबा का अवसर दिया जाएगा[4](84) और जब अत्याचारी अजाब देख लेंगे तो फिर न वह उनसे कम किया जाएगा और न उनको मोहलत दी जाएगी(85) और जब मुश्रिक अपने साझीदारों को देखेंगे तो कहेंगे ऐ हमारे रब! यही हमारे वह साझीदार हैं जिनको हम तेरे अतिरिक्त पुकारा करते थे तो वे उन पर बात को पलट देंगे कि निश्चित रूप से तुम्ही झूठे हो(86) और वे उस दिन अल्लाह के सामने हथियार डाल देंगे और जो कुछ गढ़ा करते थे वह सब उनसे हवा हो जाएगा (87)।

तफ़्सीर (व्याख्या):—

1. अरब के मुश्रिक अपने शिर्क के समर्थन में यह उदाहरण देते थे कि जिस प्रकार यहां राजा अकेला अपनी सरकार नहीं चला सकता उसके बहुत से काम अपने मंत्रियों को सौंपने पड़ते हैं इसी प्रकार अल्लाह ने भी खुदाई के बहुत से काम दूसरों को सौंप दिए हैं, हम इसीलिए खुदाई में साझीदार इन देवताओं को पूजते हैं, इस आयत में बताया जा रहा है कि अल्लाह का उदाहरण किसी भी सृष्टि से देना अत्यंत अज्ञानता और मूर्खता की बात है फिर आगे आयतों में दो उदाहरणों से बताया गया है कि प्राणियों में परस्पर इतना बड़ा अंतर है कि कोई बहुत उच्च कोटी का है कोई बहुत साधारण, तो स्रष्टा और सृष्टि में कितना बड़ा अंतर होगा, फिर किसी सृष्टि को स्रष्टा के साथ पूजा में कैसे साझीदार बनाया जा सकता है? फिर आगे इंसानों पर अल्लाह के पुरस्कारों का और अल्लाह की शक्ति का बयान है।

2. यह सब अल्लाह के पुरस्कारों का वर्णन है, अरबों में शिविरों (खेमों) का बड़ा चलन था, यात्राओं में वही काम आते थे, वस्त्रों की सबको आवश्यकता होती थी विशेष रूप से कवचों का भी उल्लेख है कि वे योद्धा लोग थे।

3. सारी नेअमतें अल्लाह ने उनको दीं और धर्म (दीन) की सबसे बड़ी नेमत प्रदान की जो आपके द्वारा उनको प्राप्त हुई, इसके बाद भी अगर वे नहीं मानते और मुंह मोड़ते हैं तो आप दुखी न हों, आप का काम पूरा हुआ, अब अगर वे नहीं मानेंगे तो खुद भुगतेंगे।

4. हर क़ौम का पैग़म्बर गवाह बन कर खड़ा होगा और बतायेगा कि सत्य उन तक पहुंचाया गया था, जब तौबा कर लेने और बाज आ जाने का समय था तो उन्होंने नहीं माना, अब उसका समय समाप्त हो गया, अजाब सामने है, अब वह टलने वाला नहीं, अल्लाह उनको अपमानित करने का प्रबंध भी करेगा कि उनके सब देवी-देवताओं को एकत्र कर देगा, उनको देख कर मुश्रिक कहेंगे कि ऐ हमारे पालनहार! हम इन्हीं को तेरे अतिरिक्त पुकारते थे, अल्लाह तआला इन मूर्तियों को भी उस दिन बोलने की शक्ति प्रदान करेगा और वे साफ कहेंगे कि तुम झूठे हो, हमें तुम्हारे इस काम से क्या सरोकार, वे भी यह कह कर दामन झाड़ लेंगे और वे सब शिर्क करने वाले असहाय होकर रह जाएंगे।

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ0 हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0

एहसान शनासी (कृतज्ञता) का बयानः-

''जज़ा कल्लाह'' (अल्लाह तुमको बदला दे) कहने का महत्वः—

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः जिस आदमी के साथ अच्छा व्यवहार किया गया और उसने उस अच्छे व्यवहार करने वाले से ''जज़ा कल्लाह'' (अल्लाह तुमको बदला दे) कह दिया तो उसने तारीफ़ का हक अदा कर दिया।

(अबू दाऊद व तिर्मिजी)

अल्लाह पर भरोसा रखने की शिक्षाः—

हज़रत अबू बक्र रज़ि0 बयान करते हैं कि मैंने मुश्रिकीन (बहुदेववादियों) के पैर देखे, हम गार (गुफा) में थे, और वो हमारे सरों पर, मैंने कहा! ऐ अल्लाह के रसूल! अगर इनमें से एक भी अपने पैर के नीचे देखे तो वह हमको देख लेगा। आप सल्ल0 ने फरमाया ऐ अबू बक्र! ऐसे दो के बारे में तुम्हारा क्या ख़्याल है जिनका तीसरा अल्लाह है।

(बुखारी व मुस्लिम)

बिना हिसाब व किताब के जन्नतीः—

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया— मेरी उम्मत में से सत्तर हज़ार आदमी बिना हिसाब व किताब के जन्नत में जाएंगे, ये खुदा के वो बन्दे होंगे जो मंत्र, तावीज़, गण्डा नहीं करवाते और न ही बदशगूनी (अपशकुन) लेते हैं और अपने रब पर भरोसा करते हैं। (बुखारी)

अल्लाह पर भरोसाः—

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फरमाते हैं कि जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आग में डाला गया तो आप ने फरमाया— ''हस्बुनल्लाहु व निअ़मल वकील'' (हमारे लिए अल्लाह ही काफी है और वही बेहतरीन काम बनाने वाला है) और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब लोगों ने कहा— तुम्हारे लिये लोगों ने बड़ा सामान और बड़ी तैयारी की है, उनसे डरो, तो आप सल्ल0 ने वही बात कही (हस्बुनल्लाहु व निअ़मल वकील)। (जिसने सुना) सभी का ईमान बढ़ गया और कहा ''हस्बुनल्लाहु व निअ़मल वकील''। (बुखारी)

अल्लाह पर भरोसा करने का महत्वः—

हज़रत अबू हुरैरः बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल0) ने फरमाया — जन्नत में कुछ लोग ऐसे दाखिल होंगे जिनके दिल चिड़ियों जैसे होंगे (अर्थात अल्लाह तआला पर पूरा भरोसा करने वाले) जैसे चिड़ियाँ कुछ जमा नहीं करतीं, सुबह को वह भूखे पेट निकलती हैं और शाम को भरे पेट वापस आती हैं। (मुस्लिम)

हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि0 बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल0 को फरमाते हुए सुना है कि अगर तुम अल्लाह तआला पर पूरा भरोसा करो तो तुमको वह इस तरह से रोजी दे जैसे चिड़ियों को देता है, (चिड़ियाँ) सुबह खाली पेट निकलती हैं और शाम को भरे पेट वापस होती हैं। (तिर्मिजी)

अल्लाह वालों की बरकतः—

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 के जमाने में दो भाई थे, उनमें एक अल्लाह के रसूल सल्ल0 की सेवा में हाजिर होते थे, और दूसरे कारोबार करते थे, कारोबार करने वाले भाई ने अपने उस दूसरे भाई की जो हुजूर सल्ल0 की सेवा में हाजिर होते थे अल्लाह के नबी सल्ल0 से शिकायत की कि ये कारोबार में हाथ नही बँटाते हैं, आप सल्ल0 ने फरमायाः हो सकता है कि तुमको उन्हीं के कारण रोज़ी—रोटी मिलती हो। (तिर्मिजी)

❖❖❖

इन्सानियत के मसीहा

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

अल्लाह ने इन्सानों की रहबरी और रहनुमाई के लिए हर ज़माने में अपने नबियों और पैग़म्बरों को भेजा जिनकी संख्या एक लाख चौबीस हज़ार के क़रीब है।

उन नबियों में पहले नबी ख़ुद इन्सानों के मूरिसे अव्वल (पूर्वज) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम नबी की हैसियत से अपनी औलाद को सीधे रास्ते पर और अल्लाह की बन्दगी पर क़ायम रखने की फ़िक्र व कोशिश के लिए नियुक्त हुए, इसलिए उनकी औलाद बराबर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के बताए हुए रास्ते पर चलती रही लेकिन जब वक़्त और नस्लों के गुज़रने के साथ उनमें बिगाड़ आता गया तो आवश्यकतानुसार उनमें नबी भेजे जाते रहे, अल्लाह ने फ़रमायाः— कोई क़ौम ऐसी नहीं जिनमें डराने वाला न आया हो।

(सूरः फातिर—24)

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक जितने नबी आए सबने शिर्क (अनेकेश्वरवाद) छोड़ने और तौहीद (ऐकेश्वरवाद) के अक़ीदे पर चलने की सख़्ती से हुक्म दिया, हज़रत मुहम्मद सल्ल0 अल्लाह के अन्तिम नबी हैं जिनके बाद क़यामत तक कोई दूसरा नबी नहीं आयेगा जिसका ऐलान अल्लाह ने अपने नबी की ज़बान से करवाया— ''ला नबीया बादी'' मेरे बाद कोई नबी नहीं, आप सल्ल0 द्वारा जो दीन व शरीअत आई वह हर प्रकार से परिपूर्ण है। अल्लाह तआला ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को संबोधित करते हुए फरमाया ''वमा अरसल्नाका इल्ला रहमतल लिलआलमीन''।

(सूरः अलअम्बिया—107)

अनुवादः— ''ऐ मुहम्मद सल्ल0 हमने आपको सारे संसार के लिए सर्वथा दयालुता बना कर भेजा है''। आप सल्ल0 की नबूवत पूरे संसार और क़यामत तक हर ज़माने के लिए है।''

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के छः सौ साल बाद आप सल्ल0 नबी बनाये गये। यह बीच का ज़माना जो नबियों से खाली गुज़रा मज़हबी व अख़लाक़ी लिहाज़ से बड़े बिगाड़ और ख़राबियों तक पहुंच गया था, यह ख़राबियाँ एक देश और एक क्षेत्र तक सीमित नहीं थीं बल्कि पूरा भूमण्डल प्रभावित था। छटी सदी मसीही की ईरान और रूम जैसी उन्नतिशील और सभ्य सल्तनत भी नैतिकता और धर्म के दृष्टिकोण से तबाही के कगार पर थी, इसके अतिरिक्त अरब द्वीप जो दीने इब्राहीम का केन्द्र था, वहां अल्लाह का घर बैतुल्लाह था जिसका निर्माण हज़रत इब्राहीम और उनके बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिमस्सलाम ने किया था, वह अल्लाह का घर बुतपरस्ती का अड्डा बन गया था।''

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के अभ्युदय के समय पूरी इन्सानियत आत्म हत्या के रास्ते पर तेज़ी से बढ़ रही थी, इन्सान अपने बनाने वाले मालिक को भूल चुका था और ख़ुद अपने आपको और अपने भविष्य को भुला चुका था, उसके अन्दर

भलाई और बुराई, अच्छे और बुरे की पहचान करने की क्षमता नहीं बची थी। ऐसा मालूम होता था कि लोगों के दिल व दिमाग़ किसी चीज़ में खो चुके हैं। उनको दीन व आख़िरत (इस ज़िन्दगी के बाद आने वाली ज़िन्दगी) की तरफ़ सिर उठा कर देखने की फ़ुरसत नहीं थी। आत्मा और अन्तः करण की शान्ति, परलोक की भलाई, मानवता की सेवा और सुधार के लिए उनके पास एक पल खाली नहीं था कभी–कभी पूरे देश में एक व्यक्ति भी ऐसा दिखाई नहीं पड़ता था जिसको अपने दीन की फ़िक्र हो, जो एक अल्लाह को पूजता हो, और किसी दूसरे को अल्लाह के साथ न जोड़ता हो। जिसकी अन्तरात्मा में इन्सानियत के लिए दर्द हो और उसके अंधेरे भविष्य के लिए बेचैनी हो। यह हालत अल्लाह पाक के इस इरशाद को दर्शाती थी किः–

अनुवादः– ''जल और थल में लोगों के कर्म की वजह से फ़साद फैल गया है, ताकि अल्लाह उनको उनके कुछ एक कर्मों का मज़ा चखाए, अजब नहीं कि वह बाज़ आजाएं''।

(सूरः रूम–41)

छठी शताब्दी के मध्य में बिगाड़ इतना बढ़ चुका था और मानवता, पतन के ऐसे गढ़े में पहुँच चुकी थी कि अब वह किसी सुधारक या नैतिक शिक्षा के किसी उपदेशक के बस की बात न थी। सवाल किसी एक अक़ीदे को सही करने, किसी ख़ास आदत के बदलने या इबादत के किसी तरीक़े के चुनने का न था और न ही समस्या समाज सुधार की थी, इसके लिए वह सुधारक और शिक्षक काफ़ी थे, जिनसे कोई दौर और कोई इलाक़ा कभी खाली नहीं रहा। समस्या यह थी कि अज्ञानता की चादर ओढ़े शिर्क व बुतपरस्ती के उस भयंकर मलबे को किस तरह हटाया और साफ़ किया जाए जो सदियों से तले ऊपर जमा हो रहा था और जिसके नीचे नबियों की शिक्षाएं और सुधारकों की कोशिशें दफ़न थीं और फिर उसकी जगह वह नई बड़ी और शानदार इमारत कैसे खड़ी की जाए जिसकी छाया में पूरी इन्सानियत को पनाह मिल सके। समस्या, फसाद व बिगाड़ की जड़ को हमेशा के लिए ख़त्म करने और बुत परस्ती को जड़ से उखेड़ने की थी कि दूर–दूर तक उसका कोई असर व निशान बाक़ी न रह जाए और तौहीद का अक़ीदा लोगों के दिल व दिमाग़ में इस तरह रच बस जाए कि उससे आगे सोचा भी न जा सके। इन्सान के दिल में अल्लाह की रज़ा की तलब, और उसकी इबादत की लगन, मानव सेवा, सत्य मार्ग पर चलने की भावना यह वह मौलिक उद्देश्य हैं जिनकी पूर्ति के लिए अल्लाह ने अपने अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को दुनिया में भेजा। अन्तिम नबी होने की वहज से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बड़ी विशेषता और महानता है, आप सल्ल0 की आमद की सूचना सैकड़ों और हज़ारों वर्ष पहले दी गई, जिसका ज़िक्र मौलाना अलताफ़ हुसैन हाली पानीपती ने अपने संग्रह ''मुसद्दस हाली'' में दुआए–ख़लील और नवेदे मसीहा के शीर्षक से किया है, जिसकी पुष्टि पवित्र क़ुर्आन से होती है।

अनुवादः– ''और जब ईसा पुत्र मरियम ने कहा ऐ बनी इस्राईल, बेशक मैं अल्लाह का रसूल बना कर तुम्हारी ओर भेजा गया हूँ, मुझसे पहले जो तौरेत उतरी थी उसकी पुष्टि

करता हूँ, और एक ऐसे रसूल का शुभ समाचार सुनाता हूं जो मेरे बाद आएगा उसका नाम ''अहमद है'' ।

(सूरः सफ़ आयत नं0 6)

कई हज़ार वर्ष पहले सय्यदिना इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने नबी करीम सल्ल0 के लिए दुआ फरमाई थी—

अनुवादः— ''ऐ हमारे पालनहार! उनमें एक ऐसा पैग़म्बर भेज दे जो उनको तेरी आयतें पढ़ कर सुनाए और उनको किताब व हिकमत की शिक्षा दे और उनका तज़किया करे'' ।

(सूरः बक़रः आयत नं0 129)

नबी करीम सल्ल0 का नबवी जीवनकाल केवल 23 वर्ष है, नबूवत से सम्मानित होने के बाद आप सल्ल0 ने 13 वर्ष मक्के में व्यतीत किए और 10 वर्ष मदीने में व्यतीत किये, इस 13 वर्षीय इस्लामी दअ़वत के परिणाम स्वरूप न केवल अरब द्वीप में क्रान्ति आई बल्कि समय के साथ साथ दुनिया के हर महाद्वीप में क्रान्ति आई, इस क्रान्ति के नतीजे में मानवता को उच्च और सम्मानीय स्थान मिला, संसार के स्वामी और सृष्टा ने अपने बन्दों के मार्गदर्शन और निर्देशन के लिए अपने अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को भेजा, और अपनी किताब कुरआन मजीद को नाज़िल फ़रमाया इस समय कुरआन के अतिरिक्त कोई आसमानी किताब अपनी वास्तविक सूरत में नहीं है, अल्लाह तआला ने फरमाया ''हम ही ने कुरआन को उतारा और हम ही इसकी रक्षा करने वाले हैं'' ।

(सूरः अलहिज्र आयत नं0 9)

कुरआनी शिक्षा में शिर्क (अल्लाह के साथ दूसरे को साझीदार बनाना) बहुत बड़ा पाप और अन्याय है जो किसी हाल में क्षमा योग्य नहीं, तौहीद (एकेश्वरवाद) इस्लाम का बुन्यादी अक़ीदा है जिसको कुरआन ने बार बार दुहराया है।

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 द्वारा मानवता के लिए बहुत से उपकार और सम्मान हैं। सबसे बड़ा और महान उपकार ''अक़ीद—ए—तौहीद'' (एकेश्वरवाद का विश्वास) जिसका ऐलान और इक़रार कलिम—ए—ला इलाहा इल्लल्लाह के शब्दों से किया जाता है।

तौहीद (एकेश्वरवाद) का अक़ीदा, एक क्रान्तिकारी और शक्तिशाली अक़ीदा है जो संसार के समस्त झूठे और बनावटी ख़ुदाओं से नजात दिलाता है, कुरआन ने झूटे ख़ुदाओं की वास्तविकता को उदाहरण द्वारा समझाया है।

अनुवादः— ''ऐ लोगो! एक उदाहरण दिया गया है, तो उसे ध्यान से सुनो, जिनको तुम अल्लाह को छोड़ कर पुकारते हो, वे एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते चाहे वे सब उसके लिए एकट्ठा हो जाएं और अगर मक्खी उनकी कोई वस्तु ले उड़े तो उससे छीन भी नहीं सकते, लचर है ऐसा मांगने वाला भी और वह भी जिससे मांगा जा रहा है।''

''उन्होंने अल्लाह को जैसा पहचानना चाहिए था न पहचाना बेशक अल्लाह तो बड़ी शक्ति वाला ज़बरदस्त है'' ।

(सूरः हज, आयत नं0 73—74)

मक्खी एक साधारण जीव है उसका उदाहरण दिया जा रहा है कि जिनको अल्लाह के साथ साझीदार ठहराया जा रहा है वे एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते और मूर्तियों का हाल यह है कि यदि मक्खी उन पर बैठ जाए तो उड़ा भी नहीं सकते, ऐसों से मांगना कैसी शर्मनाक और मूर्खता की बात है।

इस्लाम से पहले यह

मानव ऐसी चीज़ों के सामने झुकता था तथा उससे डरता अथवा उनसे भलाई की आशा रखता था जिन्हें उसने स्वयं बनाया था, मानव केवल पहाड़ों नदियों, वृक्षों, पशुओं, भूत परेतों और प्राकृति के अजूबों ही के सामने नतमस्तक नहीं होता था, वह नाग, न्योला, चूहा आदि तथा कीड़े मकोड़ों तक के सामने सर झुकाता था, उसने अपना पूरा जीवन शंका व दुविधा, अन्ध विश्वास काल्पनिक भय तथा आशाओं और इच्छाओं के बीच व्यतीत कर दिया था जिसके फलस्वरूप उसके अन्दर कायरता व कमज़ोरी, मनोवृत्ति की बेचैनी, असन्तोष व व्याकुलता जैसी बीमारियों ने घर कर लिया, इस बारे में प्राचीन भारत का देवी देवताओं की बाहुलता के लिहाज़ से विशिष्ट स्थान प्राप्त था जहां छठी शताब्दी में बुत परस्ती मूर्ति पूजा अपनी चरम सीमा पर पहुंच गई, इस शताब्दी में माबूदों (पूज्य) की संख्या 33 करोड़ तक पहुँच गई। और प्रत्येक आकर्षक, होलनाक तथा देखने में लाभप्रद चीज़ उपासना (इबादत) के योग्य समझी गई।

कुरआन तथा हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की रिसालत ने यह घोषणा की, कि यह संसार बिना हाकिम व मालिक अथवा कई हाकिमों की संयुक्त सम्पत्ति नहीं बल्कि इसका एक ही स्वामी है जो इसका सृष्टा व निर्माता तथा इसका हाकिम व शासक है, और उसी का काम पैदा करना और उसी का काम हुक्म देना है। इस दुनिया की हर चीज़ उसी के हुक्म और कुदरत से पैदा होती है, इस प्रकार यह सृष्टि अपनी रचना में उसके अधीन है।

अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्ल0 ने मानव को तौहीद के साफ, आसान, मान्य उत्साहवर्धक अक़ीदा (विश्वास) के द्वारा एक नया जीवन प्रदान किया जिसके फलस्वरूप मनुष्य हर प्रकार के डर व ख़तरे से आज़ाद हो गया, अब उसको ईश्वर के अतिरिकत किसी चीज़ से डरने की ज़रूरत नहीं, उसे यह विश्वास हो गया कि एक ईश्वर ही नुक़सान पहुँचाने वाला और नफ़ा (लाभ) देने वाला है, वही देने वाला और रोकने वाला और वही अकेला मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला है। इस विश्वास ने उसकी निगाहों में दुनिया की तस्वीर बदल दी। और वह हर तरह की ग़ुलामी, दुनिया के डर व लालच से तथा मन मस्तिष्क को परेशान करने वाली चीज़ों से आज़ाद हो गया। तौहीद के अक़ीदे ने अनेकता में ऐकता की भावना जागृत कर दी।

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 हर दौर और हर ज़माने में इन्सानियत के मसीहा हैं जिनके द्वारा सफल जीवन व्यतीत करने के लिए एक दस्तूर मिला, कुरआन जैसी किताब मिली, आपका जीवन चरित्र ज़िन्दग़ी के हर मोड़ पर रोशनी का मिनारा है।

हज़ारों दुरूद व सलाम हो उस नबी—ए—बरहक़ पर जिसके आगमन से मानव और मानवता को सर्वश्रेष्ट स्थान मिला।

आप (सल्ल0) सबके इमाम

आप ख़ैरूल अनाम, आप सबके इमाम
आप ख़त्मुर्रुसुल, आप आली मुक़ाम
आप का लुत्फ़ ख़ास, आपका फ़ैज आम
आप पाकीज़ा दिल, आप शीरीं कलाम
आप मेहरे मुबीं , आप माहे तमाम
आप शाहे जहाँ, आप के ख़ासो आम
आपके ख़ूब रू, आपके मुश्क फ़ाम
आपके रोज़ो शब, आपके सुब्हो शाम
आप सबके हुज़ूर, आपके सब ग़ुलाम
आप पर हों दुरूद, आप पर हों सलाम

❖❖❖

पिछले अंक से आगे

समाज की बुराईयाँ और उनका इलाज

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

दिखावाः-

तौहीद के बाद जो चीज सबसे ज़्यादा ज़रूरी है, वह इख़लास है, शिर्क के नतीजे में सब काम बर्बाद हो जाते हैं, और रियाकारी के नतीजे में हर वो अमल बर्बाद हो जाता है जिसमें इख़लास न हो और वो दिखावे के लिए किया जाए, यहाँ तक फरमा दिया गयाः—

अनुवादः— "आमाल का दारोमदार नीयतों पर निर्भर है, और हर व्यक्ति के लिए वही है जो उसने नियत की, जिसकी हिजरत दुनिया हासिल करने या किसी औरत से शादी करने की हो तो उसकी हिजरत उसी के लिए मानी जाएगी जिसके लिए उसने हिजरत की"।

(सहीह बुखारीः 1)

एक हदीस के ये शब्द हैंः—

अनुवादः— "मुसलमान का दिल तीन चीजों में खोटा नहीं होता, काम को खालिस अल्लाह के लिए करना, मुसलमानों के लीडरों की खैरख्वाही करना, और उनके ग्रुप के साथ लगे रहना"।

(सुनन तिरमिजीः 2870)

हर अमल शुरू करने से पहले नियत को याद कर लिया जाए, अपने नियत व दिमाग को अच्छी तरह टटोल कर देखा जाए और उसके रुख को खालिस अल्लाह की तरफ कर के सिर्फ उसी की खुशी के लिए काम किया जाए, फिर उस नियत पर नज़र रखी जाए कि दरमयान में कहीं नियत में खराबी पैदा न हो, हदीस में रमजान के रोजों और रात की शब्बेदारी के बारे में भी फरमा दिया गयाः—

अनुवादः— "जो शबेक़द्र में खड़ा रहे अल्लाह के वादे पर यकीन करते हुए, उसके सवाब की लालच में, तो अल्लाह उसके सब गुनाह माफ फरमा देंगे और जो रमजान के रोजे रखे अल्लाह के वादे पर यकीन करते हुए, उसके सवाब की लालच में तो अल्लाह उसके सब गुनाह मॉफ फरमा देंगे"।

(बुखारीः 1901)

एक बुजुर्ग का वाकिया नक़ल किया जाता है कि वो बड़ी खूबसूरत आवाज़ और खास अंदाज़ से तिलावत में मशगूल थे, एक सख़्स का वहां से गुज़र हुआ, उनके दिल में ये बात आ गयी कि ये अगर इस कैफियत और खुशुअ़ को देखेगा तो अच्छा असर पड़ेगा, उसके गुजरने के वक्त उन्होंने और अच्छी आवाज उसको सुनाने के लिए अपना ली, रात को ख़्वाब में देखा कि क़यामत में आमालनामे पेश हो रहे हैं, उनको जो आमालनामा दिया गया उसमें उस दिन की तिलावत भी थी मगर वो आयतें नहीं थीं जो दरमयान में किसी को दिखाने के लिए पढ़ी थीं, उन्हों ने जब पूछा तो यही जवाब मिला कि ये तुमने अल्लाह के लिए नहीं किया इसलिए इसके सवाब से महरूम कर दिए गए।

एक बार सहाबा दज्जाल का जिक्र कर रहे थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ लाए और फरमायाः— क्या मैं तुम्हें वो चीज़ न बताऊँ जो दज्जाल से ज़्यादा खतरनाक है, सहाबा ने अर्ज कियाः ज़रूर, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया शिर्के—खफी, ये कि आदमी नमाज़ में खड़ा हो और उसको बहुत अच्छे ढंग से अदा करे, सिर्फ इसलिए कि लोग उसे देख रहे हैं।

(सुनन इब्ने माजः 4344)

शेष पृष्ठ .....28........पर

जब ज़ुबाँ पर मुहम्मद का नाम आ गया

हज़रत मौलाना शाह मुहम्मद अहमद सा0 प्रतापगढ़ी

जब ज़ुबाँ पर मुहम्मद का नाम आ गया।
दोस्तो! ज़िन्दगी का प्याम आ गया।।
आ गया इंबिया का इमाम आ गया।
ले के फ़ैज़ाने दारुस्सलाम आ गया।।
तेरे दर पर जो ख़ैरुल अनाम आ गया।
उसके हाथों में इरफाँ का जाम आ गया।।
साज़ व सामाने ऐशे दवाम आ गया।
यानी हुक्मे सुजूदो क़ियाम आ गया।।
अल्लाह अल्लाह हुई दिल की दुनिया हसीं।
जब मुक़द्दर से हुस्ने तमाम आ गया।।
पा गया पा गया हासिले ज़िन्दगी।
दर पे आक़ा के जिस दम ग़ुलाम आ गया।।
दूर ज़ुलमत हुई दिल मुनव्वर हुआ।
जब मदीने में माहे तमाम आ गया।।
लाए तशरीफ़ जब सय्यदुल मुरसलीं।
खुल्द दुनिया बनी वह निज़ाम आ गया।।
ज़ुल्म रुख़सत हुआ अद्ल क़ायम हुआ।
इश्क़ के हाथ में इंतज़ाम आ गया।।
तेरे अब्रे करम से शहे अंबिया।
हो के सैराब हर तिशना काम आ गया।।
फ़ैज़ साक़िये कौनैन सल्ले अला।
जो भी चाहे पिये इज़्ने आम आ गया।।
तेरी बरकत से ऐ सय्यदे इंसों जाँ।
सुब्ह रौशन हुई कैफे शाम आ गया।।
आपकी मद्ह इंसान क्या कर सके।
अर्श से जब दुरूद व सलाम आ गया।।
क़ल्ब शादाँ हुआ रूह रक़्साँ हुई।
लब पे अहमद का शीरीं कलाम आ गया।।

❖❖❖

पिछले अंक से आगे

भारत के अतीत में

मुस्लिम शासकों की धार्मिक निष्पक्षता

सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

दीन-ए इलाही और मुल्ला बदायूँनी:-

मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूँनी के लेखों का निचोड़ यह है:—

बादशाह का अधिकतर समय इबादतघर में उलमा और मशाएख के साथ व्यतीत होता, विशेष रूप से जुमे की रातें, रात में जागना, धार्मिक समस्याओं का शोध और सिद्धान्तों और गौड़ विषयों की वार्ता में व्यतीत होता था। उलमा की जुबाने तलवारों की तरह चलती थीं। मजहब और मसलक के मतभेद इतने गंभीर हो गए थे कि एक—दूसरे को काफिर कहा जाने लगा। सुन्नी, शीया, हनफी, शाफई, फकीह और हकीम की तुलना और मुकाबले से हटकर धर्म के मौलिक विश्वासों पर बहस होने लगी। दरबारी उलमा एक—दूसरे को गुमराह और खब्ती कहने लगे। उलमा के इन मतभेदों और सन्देहों से लाभ (धर्म में नई बातें) जोड़ने वालों ने उठाया, उन्होंने सच को झूठ और गलत को सही बताना शुरु किया। बादशाह अपनी अच्छी बुद्धि के कारण से सच्चाई की तलाश में था। लेकिन अनपढ़ होने के कारण सच्चाई को समझने में असमर्थ था। उसको तरह—तरह के सन्देह पैदा होते गए। जिनसे वह आश्चर्यचकित हो गया। और मूल धर्म से भटक गया। जिसके बाद 5—6 वर्ष के अन्दर इस्लाम का सारा प्रभाव जाता रहा और सारा मामला उलटकर रह गया।

दरबार में हर क्षेत्र और हर धर्म के विद्वान एकत्र होते और बादशाह से बात करने का अवसर प्राप्त करते रहे। उन्होंने रात—दिन इस जाँच और शोध को अपना काम और व्यवसाय बना लिया। इसके अतिरिक्त वह कोई और काम न करते। वह अजीबो—गरीब बातें करते। ऐसे—ऐसे ऐतिहासिक और धार्मिक शोध प्रस्तुत करते कि उनको संक्षिप्त ढंग से कहने में भी कई रजिस्टर की आवश्यकता है। बादशाह को जो चीज पसन्द आ जाती उसका चुनाव कर लेता। लेकिन उसको वह चीज़ पसन्द न आती जो मुसलमानों की होती। जो चीज उसकी इच्छा के विरुद्ध होती उससे वह बचता। बचपन से जवानी और फिर जवानी से उम्र ढलने तक उसकी स्थिति कुछ ऐसी रही कि उसने विभिन्न किस्म के धर्मों के मामलों और विश्वासों की जानकारी प्राप्त की और एक अलग ढंग के ज्ञान का मालिक बन गया और उसकी अन्तरात्मा में एक अजीब किस्म का विश्वास पैदा हो गया। उसके दिल में यह विचार पत्थर की लकीर बन गया कि विद्वान सभी धर्मों में होते हैं। हर कौम में इबादत करने वाले और ज्ञान—ध्यान वाले लोग होते हैं। इसलिए सच्चाई को ऐसे धर्म और ऐसी मिल्लत में सीमित कर देना अनिवार्य नहीं जो तुलनात्मक रूप से नया हो और उसकी मुद्दत को 1000 वर्ष से अधिक नहीं व्यतीत हुए हों। एक धर्म को स्वीकार करना और दूसरे को निरस्त करना या एक को दूसरे पर वरीयता देना उचित नहीं। बादशाह के इन विचारों को समनिया अर्थात बौद्ध धर्म के विद्वानों और ब्रह्मणों ने अधिक सराहा। उन्होंने प्रतिष्ठा और नौकरी प्राप्त की। वह अपने परम्परागत और वास्तविक विद्याओं में दूसरों से बेहतर थे। इसलिए उन्होंने अपनी बुद्धि और परम्परा के तर्कों से अपने धर्म की सच्चाई स्पष्ट की और दूसरों के धर्म को झूठा घोषित कर दिया और अपने दृष्टिकोणों के स्पष्ट बिन्दुओं को इस तरह सिद्ध कर दिया कि कोई उनका

इन्कार नहीं कर सकता था.....। हश्र नश्र और पैगम्बर की हदीस की सारी बातों को किनारे लगा दिया और धर्म की बहसों और दृष्टिकोणों के सम्बन्ध में दार्शनिकों की विरोधाभाषी बातों को चुन–चुनकर प्रस्तुत किया और अपने धर्म की ओर बादशाह को प्रेरित किया।

पुरुषोतम नामी बादशाह को अपने पास तन्हाई में बुलाया और उससे संसार में मौजूद वस्तुओं के नाम हिन्दी में मालूम किए। उसके बाद देवी ब्राह्मण को अपने पास बुलाया। उसकी चारपाई रस्सियों से ऊपर खींचकर बादशाह के शयनागार के झरोखे के बराबर लगा दी जाती और वह रात को इस तरह लटक कर हिन्दू धर्म की रहस्मय बातें, कहानियाँ, मूर्तियों की पूजा, आग और सूरज की पूजा और सितारों के सम्मान के रहस्य बताता। ब्रह्मा, महादेव, विष्णु, कृष्ण, राम और महामाया की प्रतिष्ठा के तर्क प्रस्तुत करता जिनमें से हिन्दू कुछ को ईश्वर और कुछ को ईशदूत समझते हैं। उनकी बातें बादशाह के दिल में उतर गयीं और वह आवागमन के विश्वास का कायल हो गया। खुशामद करने वाले मुसलमान दरबारी आवागमन की पुष्टि करने और उसको सही ठहराने में लेख लिख लिख कर बादशाह की निकटता प्राप्त करने लगे। बादशाह हिन्दुओं के धर्म के शोध की ओर बहुत अधिक झुक गया। यद्यपि हिन्दुओं के अनगिनत सम्प्रदाय हैं और हर एक अनगिनत किताबों पर विश्वास रखता है। हिन्दू धर्म की ओर झुकने के जो परिणाम थे वह दिन–प्रतिदिन स्पष्ट होने लगे। उन्हीं दिनों शेख ताजुद्दीन वल्द शेख जकरिया गजोधनी देहलवी की पहुँच बादशाह के यहाँ हो गयी। वह शेख जमाँ पानीपती के शिष्य और बहुत सी किताबों के लेखक थे। जिसमें शरह लवाएह काफी प्रसिद्ध है। नुजहतुल अरवाह की भी उन्होंने एक व्याख्या लिखी। वह शेख इब्ने अरबी सानी (द्वितीय) समझे जाते थे। वह भी रात को चारपाई पर लटककर ऊपर जाकर रात भर सूफियों के विश्वासों को बादशाह को सुनाया करते थे। वह शरीअत के कुछ अधिक पाबन्द न थे लेकिन वह सूफियों की तरह वहदतुल वजूद (अद्वैतवाद) के समर्थक थे। जिससे केवल स्वच्छन्दता और अनिश्वरत पैदा होती है। उन्होंने फिरऔन लअनतुल्लाह के ईमान को समझाया जो फुसूसुल हिक्म में लिखा हुआ है। तरजीह रजा बरखौफ और इसी तरह के और प्रश्न बादशाह के मन में बैठाए जो बुद्धि और शरीअत के विरुद्ध थे। बादशाह के मन में शरीअत से दूरी पैदा हो गयी जिसके बाद उसका यह अकीदा हो गया कि काफिर लोग जहन्नम की आग में तो अवश्य डाले जायेंगे लेकिन यह यातना उनके लिए शाश्वत नहीं होगी। शेख ताजुद्दीन ने इस प्रश्न को कुरआन की आयत और नबी (सल्ल०) की हदीस से समझाया। शेख ने बादशाह के सामने पूर्ण मनुष्य की धारणा प्रस्तुत की और उसको समय के खलीफा की तुलना करके स्वयं बादशाह के पवित्र व्यक्तित्व को इसका हकदार घोषित कर दिया और यह बताया कि पूर्ण मनुष्य बनने के बाद केवल एक दर्जा बचता है जो खुदा का दर्जा है। इस सम्बन्ध में बहुत सी खुराफातें बताईं। बादशाह के लिए सजदा का परामर्श दिया गया और उसका नाम ज़मीन बोसी रखा गया। बादशाह के सम्मान को अनिवार्य घोषित कर दिया गया और उनके चेहरे को कामनाओं का केन्द्र कहा गया। इसके समर्थन में कुछ रिवायतें प्रस्तुत की गयीं और भारत के शेखों के मुरीदों के कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए गए। इसी के बाद बादशाह पूर्ण मनुष्य और न्यायवादी, शौर्य वाला और कीर्ति वाला घोषित किया गया। उस जमाने के शेख याकूब कश्मीरी प्रसिद्ध मशाएख में से थे, बहुत सी किताबें लिखी थीं। अपने जमाने के प्रसिद्ध पेशवा भी समझे जाते थे। उन्होंने काजी ऐनुल कुजात हमदानी की भूमिकाओं से यह

सिद्ध किया कि मुहम्मद (सल्ल०) इस्मुल हादी के रूप है। और इब्लीस दूसरे इस्मुल मुजिल्ल का रूप है। दुनिया का यह सारा जलवा इन्हीं दोनों नामों से है और यह दोनों रूप अपने–अपने काम में लगे हुए हैं। मुल्ला यजदी भी चारपाई पर लटका हुआ इसी तरह जाता और तीनों खलीफा के विरुद्ध व्यंग्य करके सहाबा ताबईन, तबा ताबईन और नेक पूर्वजों और अच्छे उलमा को काफिर बताता। बादशाह की नजर में अहल–ए सुन्नत वल जमाअत का दर्जा गिराने की कोशिश में लगा रहता और शीयों के अतिरिक्त सभी लोगों को गुमराह बताया। उलमा का यह हाल था कि एक गिरोह एक चीज को हराम घोषित करता तो दूसरा उसको हलाल सिद्ध कर देता। इस चीज ने भी बादशाह को बद्‌गुमान किया। यह तो अपने जमाने के उलमा को इमाम गजाली और इमाम राजी से बेहतर समझता था। लेकिन उनकी नीच हरकतों को देखकर पुराने जमाने के उलमा का भी इन्कारी हो गया। उस जमाने में ईसाइयों का आना–जाना दरबार में हो गया था, जो पादरी कहलाते थे। उनके इज्तेहाद करने वालों को पापा कहा जाता है। उनको समय के अनुसार धार्मिक आदेशों में परिवर्तन करने का अधिकार होता है। जिससे बादशाह भी मुँह नहीं मोड़ सकता है। वह दरबार में इंजील लाए और त्रिमूर्ति के विश्वास के समर्थन में तर्क प्रस्तुत किए और ईसाई धर्म को सच्चा धर्म घोषित करके ईसाई धर्म का प्रचार किया। बादशाह के आदेश के कारण राजकुमार मुराद ने उनसे कुछ अध्याय भी पढ़े। शेख अबुल फ़जल को इंजील का अनुवाद करने के लिए आदेश दिया गया। उसने अनुवाद आरम्भ किया तो बिस्मिल्लाह (अल्लाह के नाम से) लिखने की बजाए यह वाक्य लिखेः

''ऐ नामी वे जज्द करस्तू''

अर्थात ऐ वह हस्ती कि तू बड़ा कृपाशील और बहुत क्षमा करने वाला है।

शेख फैजी ने इसका दूसरा भाग इस तरह कहाः

''सुब्हानक ला सिवाक या हुव''

अर्थात तेरा नाम पवित्र है, तेरे अतिरिक्त कोई नहीं ऐ वह।

इन निन्दित ईसाइयों ने निन्दित दज्जाल और पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) की विशेषताओं में सन्देह पैदा किए। निन्दित बीरबल ने भी बादशाह के मन में यह बैठाया कि सूरज सभी वस्तुओं का रूप है, उसी के प्रभाव से अनाज, फल और हरियाली पैदा होती है। संसार की रोशनी और संसार का जीवन भी उसी से है। इसीलिए वह सम्मान और आदर और इबादत योग्य है। सूर्योदय के समय उसी ओर मुँह करना चाहिए न कि सूर्यास्त के समय जो कि पश्चिम में होता है। इसी तरह उसने आग, पानी, पत्थर, पेड़ और सभी रचनाएँ यहाँ तक कि गाय, गोबर, माथे का तिलक और जनेऊ की पवित्रता को बताया। दरबार के निकटवर्ती विद्वानों ने भी इसका समर्थन किया कि सूरज सबसे बड़ा प्रकाश का स्रोत है। सारी दुनिया को कृपा प्रदान करने वाला है। बादशाह का पोषण करने वाला है, बादशाह मात्र उसके नायब हैं। इस तरह सूरज का आदर नौरोज जलाल में किया जाने लगा। हर साल उस दिन बड़ा समारोह मनाया जाता है। बादशाह सात ग्रहों में हर ग्रह के रंग के अनुसार प्रतिदिन कपड़े बदलता। हिन्दुओं में सूरज को अधीन करने की दुआ होती है। बादशाह इसका जाप आधी रात और सूर्योदय के समय किया करता। हिन्दू गाय का आदर करते हैं, उसके गोबर को पवित्र समझते हैं, इसलिए गाय का जबहः करना, उसका गोश्त खाना हराम घोषित कर दिया गया, इसकी अवज्ञा करने में अच्छे–अच्छे लोगों को क़त्ल कर दिया गया। चिकित्सकों ने यह सिद्ध किया कि गाय के माँस से तरह–तरह की बीमारियाँ पैदा होती हैं। इससे पाचन तन्त्र खराब होता है।

❖❖❖

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का इंसानियत पर एहसान

आए बहुत दुनिया में पाक व मुकर्रम बन कर
कोई आया न मगर रहमते आलम बन कर

नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

दुनिया में बहुत से महान लोग आए,सबकी अपनी अपनी विशेषता थी मगर उनमें संपूर्णता न थी, उनका एक पहलू शानदार था तो दूसरा पहलू अस्पष्ट, लेकिन हज़रत मुहम्मद सल्ल0 सम्पूर्णता के सबसे बड़े प्रतीक बन कर उभरे। हालांकि इस लेख में हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की संपूर्णता की नहीं बल्कि केवल एक पहलू इंसानियत नवाजी पर चर्चा की जाएगी। ये चर्चा इसलिए की जाएगी ताकि उनको पढ़कर लोगों के हृदय में ये संकल्प जागृत हो कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आचार–व्यवहार हमारे लिए आदर्श और आइडियल बनें और जीवन के हर मोड़ तथा हर अवसर पर आप सल्ल० की पैरवी एवं अनुसरण हो, सामूहिक और व्यक्तिगत जीवन में भी, एकान्त में और भीड़ में भी। यात्रा में और अन्यात्रा में भी, अपनों में रहते हुए भी और गैरों में रहते हुए भी।

आइए शुरु करते हैं कि एक बार हजरत अबू मसऊद अंसारी रज़ि० किसी गलती पर अपने गुलाम को पीट रहे थे। संयोग से हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस अवसर पर वहाँ आ पहुंचे और दुखी होकर कहा कि अबू मसऊद! इस दास पर तुम्हें जितना अधिकार है, अल्लाह को तुम पर इससे अधिक अधिकार है। यह सुनकर हजरत अबू मसऊद रज़ि० थर्रा उठे और कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल। मैं इस गुलाम को अल्लाह की राह में आज़ाद करता हूँ। हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने कहा, यदि तुम ऐसा न करते तो दोजख की आग तुमको छू लेती।

एक बार एक सहाबी (सहचर) हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुए, उनके हाथ में किसी परिन्दे के बच्चे थे और वह चीं–चीं कर रहे थे। हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा, ये बच्चे किसके हैं? सहाबी रजि० ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! मैं एक झाड़ी से गुजरा तो इन बच्चों की आवाज़ आ रही थी तो मैं इनको निकाल लाया, इनकी माँ ने देखा तो बेताब होकर सर पर चक्कर काटने लगी। आप सल्ल० ने कहा, तुरन्त जाओ और इन बच्चों को वहीं रख आओ जहाँ से लाए थे।

हजरत आइशा रज़ि० का बयान है कि हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने लिए किसी से कभी बदला नहीं लिया। उहद युद्ध में इस्लाम विरोधियों ने सख़्त वार किया और आपके दांत टूट गए तथा सर में गहरी चोट आ गई एवं आप गश खाकर गिर पड़े। सहाबा ने निवेदन किया कि आप उनके लिए बददुआ कीजिए। आप सल्ल० ने कहा कि मैं लानत करने के लिए नहीं भेजा गया हूँ, अल्लाह ने मुझे लोगों को खुदा की बारगाह में लाने के लिए भेजा है। उसके बाद आप सल्ल० ने दुआ की कि ऐ अल्लाह! मेरी कौम को सत्यमार्ग पर चला, वह मुझे नहीं जानती"।

इस्लाम के शत्रु हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके अनुयायियों को सताते रहे, यहाँ तक कि एक खुदा को मानने वालों की

अच्छी–खासी संख्या अपना वतन और घर–बार छोड़ने पर विवश हो गयी लेकिन जब मक्का विजय हुआ तो इस्लाम के घोर शत्रु हजरत मुहम्मद सल्ल० की क्षमा–दया पर आधारित थे और आपका एक इशारा इन सबके रक्त को एक क्षण में मिट्टी में मिला सकता था, लेकिन हुआ क्या? उन सभी कुरैशी सरदारों से जो भय और लज्जा से सर नीचे किए सामने खड़े थे, हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा, तुम्हें मालूम है कि मैं तुम्हारे साथ क्या करने वाला हूँ? तो उन्होंने दबी जुबान से उत्तर दिया, ऐ सत्यवान! ऐ अमानतदार! तुम हमारे शरीफ भाई और शरीफ भाई के बेटे हो तथा हमने तुम्हें सदैव नम्र हृदय वाला पाया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा, आज मैं तुमसे वही कहता हूँ जो यूसुफ अलैहिस्सलाम ने अपने भाइयों से कहा था, फिर आप सल्ल० ने कहा "तुम पर कोई आरोप नहीं,जाओ तुम सब आजाद हो"।

एक बार एक पेड़ के नीचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सो गए तलवार एक डाल पर लटका दी, गौरस इब्ने हारिस आया और तलवार निकाल कर आप सल्ल० को धृष्टतापूर्वक जगाया और बोला, अब तुमको कौन बचाएगा? आप सल्ल० ने कहा "अल्लाह"। इतना सुनना था कि वह चक्कर खाकर गिर पड़ा। आप सल्ल० ने तलवार उठाई और पूछा, अब तुझे कौन बचा सकता है? वह दंग रह गया। आप सल्ल0 ने कहा, जाओ मैं बदला नहीं लिया करता और उसको माफ कर दिया।

एक यात्रा में खाना बनाने की आवश्यकता आन पड़ी तो दूसरों के साथ आप सल्ल० भी लग गए। सहाबा ने कहा भी कि आप कष्ट न उठाएं, हम स्वयं कर लेंगे। आपने कहा, हाँ! ये सच है लेकिन मुझे ये पसन्द नहीं कि मैं तुमसे अपने को विशेष दिखाऊँ, अल्लाह उस बन्दे को पसन्द नहीं करता जो अपने साथियों में विशिष्ट बनने की चेष्टा करे।

एक बार एक व्यक्ति पवित्र सेवा में उपस्थित हुआ और देखा कि दूर–दूर तक आपकी बकरियों का रेवड़ फैला हुआ है, वह आपसे वह सब मांग बैठा। आपने उसको सारी बकरियां दे दीं। उसने अपने कबीले में जाकर लोगों से कहा कि "इस्लाम कुबूल कर लो, हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऐसे दानशील और देने वाले हैं कि निर्धन हो जाने की चिन्ता ही नहीं करते।" आपकी दानशीलता का ये हाल था कि जो कोई भी आपके पास आता अगर आपके पास कुछ भी होता तो उसको कुछ न कुछ जरूर देते अन्यथा वादा कर लेते। इस कारण लोग इतने निडर हो गए थे कि एक बार ठीक नमाज़ खड़ी होने के समय एक देहाती आया और आपका दामन पकड़ कर कहा कि मेरी एक मामूली सी ज़रूरत पूरी नहीं हो पाई है, डर है कि मैं भूल जाऊँ, इसलिए उसको अभी पूरी कर दीजिए। अतः आप उसको साथ ले गए और उसकी जरूरत पूरी करके आए तो नमाज़ पढ़ी।

एक बार एक व्यक्ति आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया। आप सल्ल० मस्जिद में थे। उस देहाती को पेशाब की हाजत हुई। वह मस्जिद की पावनता से परिचित न था। वहीं खड़े–खड़े पेशाब करने लगा। लोग हर तरफ से दौड़ पड़े ताकि उसे दण्ड दें। आप सल्ल० ने कहा,जाने दो पानी का डोल बहा दो,अल्लाह ने तुमको दुश्वारी पैदा करने के लिए नहीं बल्कि आसानी के लिए भेजा है।

हज़रत अबू हुरैरह रजि० का बयान है कि आप सल्ल० के पवित्र स्वभाव में था कि हम लोगों के साथ मस्जिद में बैठ जाते और हम लोगों से बाते करते, जब उठकर घर जाते तो हम लोग भी चले जाते।

स्वभावानुसार एक दिन मस्जिद से निकल रहे थे कि एक देहाती आ गया और उसने आप सल्ल० की चादर इस जोर से पकड़ कर खींची कि आप सल्ल० की गर्दन लाल हो गई। आप सल्ल० ने मुड़कर उसकी ओर देखा। वह बोला कि मेरे ऊँटों को गल्ले से लाद दे,तेरे पास जो माल है,वह न तेरा है न तेरे बाप का है। आप सल्ल० ने कहा, पहले मेरी गर्दन का बदला दो तब गल्ला दिया जाएगा। वह बार–बार कहता है कि मैं कदापि बदला न दूँगा। आप सल्ल० ने उसके ऊँटों पर जौ और खजूरें लदवा दीं और मन–मुटाव न रखा।

आप सल्ल0 में नम्रता कूट कूट कर भरी थी, नम्रता के कारण आप सल्ल० उकडू बैठ कर खाना खाते और कहा करते कि मैं बन्दा हूँ और बन्दों की तरह खाता हूँ तथा बन्दों की ही तरह बैठता भी हूँ। आप सल्ल० एक बार ऐसे ही बैठे थे, लोग अधिक थे, जगह कम थी। एक आदमी ये देखकर बोल उठा कि मुहम्मद! ये बैठने का कौन–सा तरीका है? तो आप सल्ल० ने कहा, खुदा ने मुझे खाकसार बन्दा बनाया है, क्रूर और अत्याचारी नहीं।

इसी प्रकार आपका वात्सल्य और प्रेम जिस प्रकार मुसलमानों के बच्चों पर था उसी प्रकार अन्य धर्म के लोगों पर भी था। एक बार कुछ बच्चे युद्ध में अनैच्छिक रूप से मारे गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सूचना मिली तो बहुत दुखी हुए। एक सहाबी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! वह बहुदेववादियों के बच्चे थे! तो आप सल्ल० ने कहा, बहुदेववादियों के बच्चे भी तुमसे बेहतर हैं, खबरदार! बच्चों की हत्या न करो, बच्चों को कत्ल न करो। हर जान खुदा ही की प्रकृति पर पैदा होती है।

एक बार की घटना है कि आप सल्ल० के सामने से एक यहूदी का जनाजा गुजरा। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खड़े हो गए। किसी ने कहा, हुजूर सल्ल०! ये एक यहूदी का जनाजा है, आप सल्ल० ने कहा, क्या ये इन्सान नहीं है?

एक बार एक व्यक्ति आप सल्ल० के पास आया और पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल! मैं गुलामों का कुसूर कितनी बार माफ करूँ? आप सल्ल० चुप रहे। उसने फिर पूछा, आप सल्ल० फिर ख़ामोश रहे। जब उसने तीसरी बार प्रश्न किया तो कहा "हर दिन सत्तर बार माफ करो"।

इतिहास का अध्ययन किया जाय तो ज्ञात होगा कि हर दौर में और हर जगह महिलाएं अपमानित रही हैं। संसार के किसी धर्म ने महिलाओं को वह स्थान नहीं दिया जो इस्लाम ने उन्हें दिया। एक जमाने में महिलाएँ पैतृक सम्पत्ति की वस्तुओं की तरह विरासत में बाँट दी जाती थीं, लेकिन इस्लाम ने सम्मान और प्रतिष्ठा के सम्बन्ध में पुरुषों के समान उन्हें स्थान दिया। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अभ्युदय से पूर्व अरब में झूठी प्रतिष्ठा के आधार पर लड़कियों को जब वह खाने–पीने और चलने–फिरने लगती थीं तो पिता सजा–सँवारकर जंगल में ले जाता और गड्ढा खोदकर उसको जिन्दा गाड़ देता था। कभी पहाड़ की चोटी पर ले जाकर नीचे फेंक दिया जाता, कभी पानी में डुबो दिया जाता था। लड़कियों के साथ होने वाले इस अन्याय को हजरत मुहम्मद सल्ल0 ने महसूस किया और इस पर रोक लगायी। आप सल्ल० की शिक्षाओं में बेटियों के पैदा होने को बरकत कहा गया और बेटियों के लालन–पालन पर जन्नत का वादा किया गया है तथा उनकी शिक्षा–दीक्षा पर जन्नत में विशेष उपहार/ पुरस्कार का भी वादा है।

हदीस की प्रसिद्ध पुस्तक तिरमिजी में है कि एक महिला हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम की पत्नी हजरत आइशा रजि० के पास आयी, जिसके साथ दो लड़कियाँ थीं। महिला ने उनसे कुछ माँगा, उस समय उनके पास एक खजूर के अतिरिक्त कुछ न था। वह खजूर उन्होंने उस औरत को दे दी। उसने खजूर के दो टुकड़े किये और एक–एक टुकड़ा दोनों बच्चियों को दे दिया तथा स्वयं कुछ न खाया और चली गयी। थोड़ी देर बाद हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम घर आये तो हज़रत आइशा रज़ि० ने उस महिला का किस्सा सुनाया। आप सल्ल० ने कहा, जिसको दो बच्चियों के लालन–पालन का अवसर मिले और वह उनके साथ ममता का व्यवहार करे तो वह बच्चियाँ उसको जहन्नम से बचाने के लिए आड़ बन जायेंगी।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जानवरों पर भी रहम खाते थे। इन बेजुबानों पर जो अत्याचार लम्बे समय से हो रहा था, उस पर आप सल्ल० ने रोक लगाई। ऊँट की गर्दन में कलादा (गले का पट्टा) लटकाने की प्रथा थी, उसको भी मना कर दिया। जीवित जानवरों के शरीर से मांस काट कर निकाल देने को भी मना किया। जानवरों की पूँछ काटने से भी रोका। जानवरों को देर तक बाँध कर खड़ा रखने से भी रोका और आदेश दिया कि जानवरों की पीठ को कुर्सी न बनाया जाय। उस दौर में एक प्रथा ये थी कि किसी जानवर को बाँध कर उसका निशाना बनाया जाता और तीर अन्दाजी का अभ्यास किया जाता। आप सल्ल० ने उस पर भी पाबन्दी लगाई। एक बार एक ऊँट रास्ते में आप सल्ल० की नज़र से गुजरा जिसका पेट और पीठ भूख के कारण मिल गए थे तो आप सल्ल० ने कहा, इन बेजुबानों के बारे में खुदा से डरो।

हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मरीजों का भी हाल–चाल लिया करते और कुशल–क्षेम पूछा करते। इस सम्बन्ध में दोस्त–दुश्मन, मुस्लिम–गैर मुस्लिम, अमीर–गरीब और दास आदि सब बराबर थे। आप सल्ल० हर एक के पास खैरियत मालूम करने जाते थे। एक यहूदी गुलाम बीमार हुआ तो आप सल्ल० उसकी खैर–खैरियत लेने पहुँचे। एक बार एक आदमी बीमार पड़ा। आप सल्ल० कुशल–क्षेम पूछने के लिए कई बार उसके यहाँ गए। जब उसका देहान्त हो गया तो लोगों ने इस आशंका से कि आप सल्ल० को अंधेरी रात में आने से परेशानी होगी, सूचना नहीं दी और दफन कर दिया। सुबह जब खबर मिली तो आप सल्ल० ने शिकायत की और उसकी कब्र पर जाकर मग़फिरत की दुआ की।

एक हब्शी मस्जिद में झाड़ू दिया करता था उसका देहान्त हो गया तो लोगों ने आप सल्ल० को सूचना नहीं दी मानो लोगों ने उसे तुच्छ जानकर ऐसा किया।एक दिन आप सल्ल० ने उसका हाल पूछा, लोगों ने बताया कि उसका तो देहान्त हो गया। आप सल्ल० ने कहा कि तुम लोगों ने मुझे खबर क्यों नहीं दी। आप सल्ल० ने उसकी कब्र का पता पूछा और वहाँ जाकर कब्र पर जनाज़े की नमाज पढ़ी।

उपरोक्त में हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की मानवतावादी जीवन की हल्की सी झलक दिखलाई गई है, इस तरह के सैकड़ों किस्से इतिहास के पन्नों में दर्ज हैं। दरअसल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जैसे महान व्यक्तित्व और उच्च व्यवहारिक सन्देष्टा से प्रेम करना, उनके आचार–व्यवहार को अपनाना स्वयं हमारे लिए सफलता और सौभाग्य की बात है। अल्लाह हम सभी को हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण का सौभाग्य प्रदान करे।

आमीन।

❖❖❖

अच्छे व्यवहार की शिक्षा

मौलाना सैयद जलालुद्दीन उमरी

समाज में जो भी व्यक्ति सेवा का हकदार हो उसकी सेवा होनी चाहिए। इस्लाम ने यह भी बताया है कि सेवा और अच्छे व्यवहार के प्राथमिक अधिकारी कौन हैं। इन्सान को मां–बाप, बाल–बच्चों और निकटतम संबंधियों से स्वाभाविक रूप से प्रेम होता है। वह उनसे एक विशेष हार्दिक संबंध महसूस करता है, इसी कारण उनकी सेवा को अपना नैतिक कर्तव्य समझता है, परंतु समाज के अन्य लोगों के साथ इस प्रकार का भावनात्मक लगाव उसके अन्दर नहीं होता, अतः उनके साथ उसका व्यवहार भी भिन्न होता है। इस्लाम इन्सानों के बीच संबंधों के प्रकार, उनके पदों और श्रेणियों को पूरी तरह ध्यान में रखता और उनके अधिकारों का निर्धारण करता है।

इसके साथ उसकी शिक्षा यह है कि इन्सान मात्र उन्हीं व्यक्तियों की सेवा करने को अपना कर्तव्य न समझे जिनसे उसका खून का संबंध है, बल्कि वह उन लोगों के साथ भी अच्छा व्यवहार करें जिनसे उसका कोई रिश्ता नाता नहीं है। उसकी सेवा और सद्व्यवहार का क्षेत्र उसके घर और परिवार से आगे बढ़कर समूचे समाज तक फैल जाए। वह संपूर्ण मानवजाति को अपना परिवार समझकर उसकी सेवा के लिए खड़ा हो जाए। कुरआन की सूरा ''निसा'' की एक आयत अति संक्षिप्त रूप में बताती है कि वे कौन लोग हैं जो सेवा और अच्छे व्यवहार के अधिकारी हैं और जिनसे गफलत और लापरवाही नहीं बरती जा सकती। वह आयत यह हैः–

''और अल्लाह ही की बन्दगी करो और उसके साथ किसी को साझी न ठहराओ। और अच्छा व्यवहार करो माँ–बाप के साथ और नातेदारों, अनाथों, मुहताजों, नातेदार पड़ोसियों के साथ और उन पड़ोसियों के साथ जो अजनबी हों, और पास के व्यक्ति के साथ और साथ के मुसाफिरों के साथ और उन (लौंडी–गुलामों) के साथ जो तुम्हारे अधिकार में हों। निस्संदेह अल्लाह किसी ऐसे व्यक्ति को पसन्द नहीं करता जो इतराने वाला और डींग मारने वाला हो।''(4:36)

इस आयत में हालांकि समाज के उन समस्त कमजोर और वंचित वर्गों का उल्लेख नहीं है जिनकी सेवा करने को कुरआन ताकीद करता है, परन्तु इससे उसके सहानुभूतिपूर्ण तथा प्रेम से भरे हुए व्यवहार को समझने में सहायता मिलती है। यहां हम इस आयत की संक्षिप्त व्याख्या करेंगे, लेकिन इससे पहले यह बात स्पष्ट कर देना उचित होगा कि कुरआन ने ''सेवा'' के लिए ''एहसान'' का पारिभाषिक शब्द प्रयोग किया है।

यह बड़ा व्यापक शब्द है जो सेवा के सभी पहलुओं पर हावी है। इसमें ढाढ़स, सहानुभूति, प्रेम, आवश्यकताओं का पूरा करना तथा किसी को उसके अधिकार से अधिक देना आदि सब कुछ आ जाता है।

माँ–बाप के साथ अच्छा व्यवहारः–

कुरआन में एक अल्लाह की इबादत का आदेश देने के पश्चात इन्सानों के साथ अच्छे व्यवहार की हिदायत की गयी है। इस विषय में सबसे पहले मां–बाप का उल्लेख किया गया है– "मां–बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो।'' (4:36)

मां–बाप की सेवा की शिक्षा दुनिया के प्रत्येक धर्म ने दी है। कुरआन मजीद में एक दो नहीं, बल्कि अनेक स्थानों पर अल्लाह की इबादत के पश्चात मां–बाप के साथ अच्छे व्यवहार का आदेश दिया गया है। इसमें

यह संकेत है कि इन्सान पर सबसे अधिक उपकार अल्लाह तआला के हैं। उसके बाद माँ–बाप के उपकार हैं। इन्सान का अस्तित्व, उसका जन्म, पालन–पोषण, देखभाल, शिक्षा–दीक्षा तथा उसके आर्थिक एवं नैतिक विकास आदि में माँ–बाप अधिक भागीदार होते हैं। यदि वे ध्यान न दें तो वह उन्नति नहीं कर सकता, बल्कि उसका अस्तित्व ही खतरे में पड़ सकता है। अशिक्षित से अशिक्षित तथा दरिद्र मां–बाप भी संतान के लिए जो कुरबानी देते हैं, इन्सानी समाज में इसका कोई दूसरा उदाहरण नहीं दिया जा सकता। उनके उपकारों में अल्लाह तआला के उपकारों की झलक दिखायी पड़ती है।

अल्लाह की इबादत वास्तव में उसके उपकारों के प्रति कृतज्ञता–प्रकाशन है। माँ–बाप का स्थान चूंकि अल्लाह के बराबर नहीं है। अतः उनकी उपासना तो नहीं की जा सकती, परंतु उनके साथ अच्छा व्यवहार करना अनिवार्य है। यही उनके उपकारों के प्रति कृतज्ञता प्रकाशन है। कुरआन ने अल्लाह तआला के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का भी आदेश दिया है और मां–बाप के प्रति कृतज्ञता दिखाने की भी हिदायत की है–

''मेरे प्रति कृतज्ञ हो और अपने मां–बाप के प्रति भी। मेरी ही ओर पलटकर आना है।''

(31:14)

वर्तमान सभ्यता ने पारिवारिक व्यवस्था को छिन्न–भिन्न करके रख दिया है। इसके साथ वे उच्चतम नैतिक मूल्य भी समाप्त होते जा रहे हैं जो इस व्यवस्था से संबद्ध थे, इसका बड़ा बुरा प्रभाव वृद्ध माँ–बाप पर पड़ा है। आज यत्नपूर्वक इस बात पर विचार किया जा रहा है कि साठ–सत्तर वर्ष के इन बूढ़ों का क्या किया जाए जो हमारे लिए बेकार हो चुके हैं। जब वे भविष्य के निर्माण में सहयोगी नहीं हैं तो उनका भार कब तक सहन किया जाए?

हालांकि जिन बूढ़ों के विषय में इस प्रकार सोचा जाता है उन्होंने वर्तमान पीढ़ी को तथा अपनी संतान को उस समय नदी में नहीं फेंक दिया जबकि वह उनके हाथों में विवश और लाचार थी और उनकी दया एवं कृपा के सहारे जी रही थी, बल्कि उन्होंने उसे अपने जिगर का खून पिलाकर पाला–पोसा और जीवन के क्षेत्र में दौड़–धूप के योग्य बनाया। कुरआन ने विशेष रूप से बुढ़ापे में मां–बाप के साथ अच्छा व्यवहार करने की ताकीद की हैः–

''यदि उनमें से कोई एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो तुम उन्हें ''उफ'' तक न कहो और न उन्हें झिड़को, बल्कि उनसे भली प्रकार बात करो और दयालुता और नर्मी के साथ उनके सामने झुककर रहो, और दुआ करो ऐ रब! जिस तरह इन्होंने बचपन में दया और प्रेम से मेरा पालन–पोषण किया है, तू भी इन पर दया कर।''

(17:23–24)

नातेदारों के साथ अच्छा व्यवहारः–

कुरआन में कहा गया है– ''और नातेदारों के साथ अच्छा व्यवहार करो।'' कुरआन ने माँ–बाप के तुरंत बाद नातेदारों का जिक्र यहां भी किया है और अन्य स्थानों पर भी। इसमें इस बात की ओर संकेत है कि माँ–बाप के बाद सबसे अधिक हक नातेदारों का है। मां–बाप ही से नातेदारों की नातेदारी पैदा होती है। अतः आधार तो वही हैं, फिर जो व्यक्ति उनसे जितना करीबी संबंध रखता है उसका हक भी उतना ही बढ़ जाता है। नातेदारों के साथ अच्छा व्यवहार ''सिला रहमी'' (खून के रिश्तों को जोड़े रखना और प्रेम करना) है। कुरआन ने इसकी बड़ी ताकीद की है। एक स्थान पर अल्लाह के प्रियजनों की विशेषताएं इस प्रकार बयान की गयी हैंः–

''(और उनकी नीति यह

होती है कि) अल्लाह ने जिन–जिन नातों को जोड़े रखने का आदेश दिया है उन्हें जोड़े रखते हैं, अपने रब से डरते हैं और इस बात से डरते हैं कि कहीं उनसे सख्त हिसाब न लिया जाए।''

(13:21)

नातेदारों से अच्छे व्यवहार से पूरा सामाजिक जीवन आनन्दमय बन जाता है। जहां यह खूबी न हो वहां सामाजिकता में बिगाड़ आ जाता है। इसी कारण नातेदारों से अच्छे व्यवहार का बड़ा महत्व बताया गया है।

हज़रत सुलैमान बिन आमिर (रज़ि0) अल्लाह के रसूल (सल्ल0) से रिवायत करते हैं कि आपने फरमायाः–

''किसी ऐसे मुहताज को (जिससे नाता न हो) सदका (दान) देना केवल एक सदका है, लेकिन यही सदका किसी संबंधी को दिया जाए तो यह सदका भी है और सिलारहमी (नातेदारों से अच्छा व्यवहार) भी।'' (तिरमिजी, नसई)

अभिप्राय यह कि नातेदारों पर खर्च करना दुगुने सवाब (पुण्य) का कारण है। एक पहलू से यह एक सामान्य सदका है जिस प्रकार अन्य सदके हैं। दूसरे पहलू से यह नातेदारों के साथ अच्छा व्यवहार भी है और सिलारहमी भी।

यह एक वास्तविकता है कि इन्सान अपने नातेदारों से स्वाभाविक रूप से निकटता महसूस करता है। इसी के साथ यह भी एक हकीकत है कि कुछ रिश्तों में बड़ी कोमलता पायी जाती है। साधारण सी घटनाओं से वैमनस्य पैदा हो जाता है और संबंध बिगड़ने लगते हैं। हदीस में कहा गया है कि इन संबंधों को बिगड़ने न दिया जाए और उन्हें कायम रखने का हर संभव प्रयत्न किया जाए। अच्छा व्यवहार इसका एक बेहतर तरीका है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि0) की रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल0) ने फरमायाः–

''नाता जोड़ने वाला (सिलारहमी करने वाला) वह नहीं है जो नातेदारों से उस समय नाता जोड़े जबकि वे भी उसके साथ अच्छा व्यवहार करें, बल्कि वास्तव में नाता जोड़ने वाला तो वह है जो उस समय नातों को जोड़े जबकि वे टूट जाएं।'' (बुखारी, अबू दाऊद)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) की रिवायत है कि एक व्यक्ति ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से कहा कि मेरे कुछ नातेदार हैं। मैं तो उनसे नाता जोड़ता हूं, परन्तु वे मुझसे नाता तोड़ते हैं। मैं उनसे अच्छा व्यवहार करता हूं और वे मेरे साथ बुरा व्यवहार करते हैं, मैं उन्हें माफ करता हूं परन्तु वे मेरे साथ घटिया व्यवहार करते हैं। आपने यह सुनकर फरमायाः– यदि तुम्हारा व्यवहार ऐसा ही है जैसा कि तुमने बयान किया है तो मानो तुम उनके मुंह में गर्म राख भर रहे हो और जब तक तुम्हारा यह व्यवहार बना रहेगा अल्लाह की ओर से एक मददगार तुम्हारे साथ रहेगा।'' (मुस्लिम)

अनाथों (यतीमों) के साथ अच्छा व्यवहारः–

माँ–बाप और नातेदारों का हक सबसे ऊपर है। उनके साथ अच्छे व्यवहार का आदेश देने के बाद समाज के अन्य मुहताजों, जरूरतमन्दों और कमजोरों के साथ सद्व्यवहार का आदेश दिया गया है। इस विषय में सबसे पहले अनाथों और मुहताजों का जिक्र किया गया है जो समाज के सबसे कमजोर वर्ग होते हैं। कुरआन में हैः– ''और अनाथों और मुहताजों के साथ अच्छा व्यवहार करो।''

(2:177)

जिस मासूम बच्चे के सिर से उसके बाप की छाया उठ जाए, वह उस खुलूस, प्रेम और ध्यान से वंचित हो जाता है जो उसके पालन–पोषण, शिक्षा–दीक्षा तथा प्रायः आर्थिक विकास और स्थिरता के लिए बुनियादी महत्व रखता है। इसलिए यह समाज की जिम्मेदारी है कि उसकी आवश्यकताएं पूरी करे और उसे बाप से वंचित होने का

एहसास न होने दे।

समाज द्वारा उपेक्षा और बेपरवाई से इतना ही नहीं कि उसका पालन–पोषण ठीक ढंग से नहीं होगा और वह शारीरिक रूप से दुर्बल होगा, बल्कि उसका उचित मानसिक एवं वैचारिक प्रशिक्षण भी नहीं हो सकेगा। आश्चर्य नहीं कि ऐसे क्रूर एवं निर्दयी समाज के विरुद्ध उसके अन्दर विद्रोह की भावना पनपने लगे और वह एक अच्छा नागरिक बनने के स्थान पर पूरे समाज के लिए हानिकारक सिद्ध हो।

कुरआन और हदीस में अनाथों के पालन–पोषण, देखभाल, शिक्षा–दीक्षा, उनकी संपत्ति की रक्षा और उनके अधिकारों की पूर्ति पर बार–बार जोर दिया गया है। हजरत अबू हुरैरा (रज़ि0) बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फरमायाः–

''अनाथ का भरण–पोषण करने वाला, चाहे वह उसका हो या किसी दूसरे का (नातेदार हो अथवा अपरिचित) वह और मैं जन्नत में इस प्रकार करीब होंगे जैसे मेरी ये दो उंगलियां।''

(मुस्लिम)

हदीस के उल्लेखकर्ता इमाम मालिक ने तर्जनी (शहादत) और बीच की उंगली को आपस में मिलाकर दिखाया।

(मुस्लिम)

अनाथ अपनी कमजोरी और नासमझी के कारण अपने वैध अधिकारों की भी रक्षा नहीं कर पाता। उसके अधिकारों को छीनना हर एक के लिए आसान होता है। कुरआन ने ऐसे लोगों को कठोर दंड की धमकी दी हैः– ''निश्चय ही वे लोग जो यतीमों के माल जुल्म से खाते हैं, वे तो अपने पेट आग से भरते हैं, और वे अवश्य जहन्नम की भड़कती हुई आग में डाले जाएंगे।'' (4:10)

इस्लाम पूरे समाज पर यह जिम्मेदारी डालता है कि वह यतीमों के न केवल पालन–पोषण की व्यवस्था करे, बल्कि उन्हें दयावान, संयमी, सुशील और शरीफ इन्सान बनाने में सहायता करे ताकि वे समाज पर बोझ और मुसीबत बनने के बजाए उसके लिए संपत्ति और साधन बन सकें।

जारी..........

❖❖❖

अपने पाठकों से

- सच्चा राही आपको कैसा लगा आप अपनी राय से अवगत करें, हम आपके पत्रों की प्रतीक्षा में रहते हैं। हम आपके सुझाओं का स्वागत करते हैं।
- हम अपने सम्मानित लेखकों से अनुरोध करते हैं कि वह सामाजिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, भौगोलिक विषयों पर अपने मूल्यवान लेख लिख कर हमें भेजें, हम आपके शुक्र गुज़ार होंगे।
- आप अपने लेख सरल भाषा में लिखें तथा विषय स्पष्ट हो, जो पाठकों को आसानी से समझ में आ सकें।
- आप सच्चा राही के नये ग्राहक बना कर हमारा सहयोग करें।
- आप अपनी आवश्यक दीनी समस्याएं लिखें हम उनके समाधान लिख कर सच्चा राही में प्रकाशित करेंगे।
- **आप अपने लेख भेजने के लिए उप सम्पादक के नं0 9450784350 का प्रयोग करें।**

E-mail: *jamalnadwi123@gmail.com*

रोशन हमारा दिल है मुहम्मद के नूर से

बेख़ुद देहलवी

रोशन हमारा दिल है मुहम्मद के नूर से।
लाये हैं इस चराग़ को हम कोहे तूर से।।
मूसा ने उसको तूर पे देखा था दूर से।
रोशन हुई है शम–ए–हरम जिसके नूर से।।
खलवत हो ऐसी जिसमें फरिश्ते न सुन सकें।
इक़ दिल की बात अर्ज करूँगा हुज़ूर से।।
उसके करम ने खींच लिया जालियों के पास।
डरता था मैं, सलाम पढ़ा मैंने दूर से।।
जब तक नबी की याद न दिल में समाएगी।
खाली न होगा दिल मेरा किबरो गुरूर से।।
दीदार हो ख़ुदा का ज़ियारत रसूल की।
फ़िरदौस से गरज है न मतलब है हूर से।।
मेरी नज़र ख़ता न करेगी यकीन है।
पहचान लूँगा हश्र में हज़रत को दूर से।।
इश्के नबी से नश–ए–इरफाँ में चूर हूँ।
धोया है मैंने दिल को शराबे तहूर से।।
आयेंगे आप दिल में यह वादा तो कीजिए।
मैं काबा माँग लूँगा ख़ुदा–ए–गफूर से।।
रूहुल कुदुस से रूह ने पाया है मेरी फैज।
सीखी है नात गोई बड़े जी शऊर से।।
तड़पूँगा मैं फिराक़े नबी में तमाम उम्र।
यह वादा ले लिया दिले नासबूर से।।
रुतबे को मुस्तफ़ा के मलायक़ से पूछिये।
सज्दे का हुक्म पहले मिला है जुहूर से।।
बेख़ुद को जाम बाद–ए–कौसर हो वह अता।
जन्नत में झूमता रहे जिसके सुरूर से।।

❖❖❖

हज़रत ईसा अलै० की पेशीनगोइयाँ
जो हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर पूरी हुईं
(एक तुलनात्मक अध्ययन)

इं0 जावेद इक़बाल

इंजील यूहन्ना, अध्याय 16 में हजरत ईसा अलै0 की एक पेशीनगोई दर्ज है जिसका खुलासा यह है कि उनके बाद एक अन्य रहनुमा आएगा जो लोगों को सत्य मार्ग की ओर लेकर चलेगा, वह जो कुछ भी कहेगा, ख़ुदा की ओर से उतारा हुआ पैगाम होगा। उसके द्वारा बहुत सी वह बातें बताई जाएंगी जो अभी मैं ने तुम्हें नहीं बताई हैं, क्योंकि अभी तुम में उन बातों को समझने की सलाहियत नहीं है। वह आगे आने वाला राहनुमा मेरी इस समय की बताई हुई बातों को दुहराएगा और वह मेरी महिमा का बखान करेगा।

(न्यू टेस्टामेंट– इंजील– यूहन्ना 16:12–14)

हज़रत ईसा के इस उपदेश को एक पेशीनगोई के रूप में देखा जाता है। इस में एक बात तो यह कही गई है कि खुदा के अनेक उपदेश ऐसे हैं जो मैं ने अभी तुम्हें नहीं बताए हैं क्योंकि अभी तुम में उन को समझने की सलाहियत नहीं है, तुम अभी उन पर अमल नहीं कर सकते। जितना सामर्थ्य इस समय के इंसानों में है उतना मैंने तुम को बता दिया है बाकी उचित समय पर मेरे बाद आने वाला ''सत्य आत्मा'' तुम को बताएगा।

मुसलमानों का पक्का अकीदा है कि हज़रत ईसा अलै0 के बाद आने वाला रसूल कोई और नहीं वह हजरत मुहम्मद सल्ल0 ही हैं। अतः किसी भी तुलनात्मक अध्ययन करने वाले निष्पक्ष विद्यार्थी के लिए ज़रूरी हो जाता है कि वह हजरत ईसा अलै0 के बाद आने वाले नबी की खोज करते समय हजरत मुहम्मद सल्ल0 के द्वारा पेश किए गए खुदा के पैगाम का भी अध्ययन करता चले। ऐसा करने पर उसे खुदा की हस्ती पर गौर करने, उसकी सिफात को समझने, उसकी प्रभुसत्ता, उसकी ताकत उसकी क्षमता पर विचार करने के नये नये पहलू नज़र आएंगे। धरती और आकाशों की रचना का, दिन और रात के आने जाने का, एक ही धरती और एक ही पानी से तरह तरह के फूल फल निकालने का, खून और गोबर के बीच से शुद्ध दूध पिलाने का बयान इतने सरल ढंग से मिलता है कि एक अनपढ़ देहाती को भी समझना आसान है। इन सब बातों को अल्लाह के अस्तित्व की दलीलों के रूप में कुरआन में समझाया गया है और कुरआन मुहम्मद सल्ल0 पर खुदा की तरफ से उतरा है। इंजील के अनुसार हजरत ईसा की उपरोक्त पेशीनगोई में यह भी कहा गया है कि वह सत्य आत्मा अपनी ओर से कुछ न कहेगा जो प्रभु की ओर से सुनेगा वही कहेगा। इस बात को अल्लाह ताला ने कुरआन में इस तरह बयान किया है, मुहम्मद अपनी मर्जी से कुछ नहीं कहते जो वहि के जरिए वह सुनते हैं, वही कहते हैं, जो उनके पास भेजी जाती है, और जो अल्लाह तआला के द्वारा सिखाया जाता है।

(कुरआन, 53:3–5)

हजरत मुहम्मद सल्ल0 के पैगाम में सच्चाई का, ईमानदारी का, इंसाफ का, अमानतदारी का, बराबरी का बहादुरी का जो जिक्र मिलता है उसके साथ साथ

सूरज, चांद सितारों की गर्दिश, दिन रात के आने जाने का, पहाड़ों के ज़मीन में जमने का, बादलों के बरसने का, इंसान की पैदाइश के मराहिल (चरणों) का, समंद्रों में जहाजों के चलने वगैरह का जो जिक्र है और साथ में इन हकीकतों पर गौर व फिक्र की जो दावत है वह इंजील में कहां। ईसा अलै0 ने तभी तो कहा था कि उन बातों को समझने की अभी तुम में सलाहियत नहीं है, मेरे बाद आने वाला सत्य आत्मा तुम्हें बताएगा।

ईसा अलै0 की भविष्यवाणी में एक बात यह भी कही गई है कि वह सत्य आत्मा तुम्हें श्रेष्ठ सत्य का मार्ग बताएगा। यह श्रेष्ठ सत्य का मार्ग क्या है? यह वही मार्ग है जिसकी कामना हर जमाने में इंसान ने की है। आदि काल के भारतीय ग्रंथों में ''अग्ने नय सुपथा राये अस्मान'' के शब्दों में सीधा रास्ता दिखाने की दुआ मिलती है। वही दुआ ''इहदि नस्सिरातल मुसतकीम'' के शब्दों में कुछ और विस्तार के साथ कुरआन में सिखाई गई है। कुरआन में फरमाया गया है कि मुहम्मद सारी सच्चाइयों को लेकर आया है, वह तुम को किताब और हिकमत की तालीम देता है, लोगो तुम्हारे पास हमारा रसूल आ गया है और हमारी रौशन किताब भी तुम्हारे पास आ गई है जो गुमराहियों के अंधेरों से निकाल कर सत्य का सीधा रास्ता दिखाती है।

(2:151, 3:164, 5:15—16)।

अल्लाह तआला के इस ऐलान की रौशनी में हजरत ईसा अलै0 की पेशीनगोई मुहम्मद सल्ल0 से ही सम्बंधित सिद्ध होती है।

हजरत ईसा अलै0 के उपरोक्त उपदेश में एक बात यह भी कही गई है कि जब वह सत्य आत्मा आएगा तो आने वाले समय की बातें तुम्हें बताएगा। हम देखते हैं कि कुरआन पाक में और हजरत मुहम्मद सल्ल0 की हदीसों में लोक परलोक की अनेक पेशीनगोइयां मौजूद हैं, जिन में से बहुत सी तो आप सल्ल0 के जीवन काल में पूरी हो चुकी हैं और अनेक के पूरा होने का अनुभव आप सल्ल0 के जीवन के बाद समय समय पर होता रहता है। परलोक से संबंधित बातों का अनुभव तो प्रत्येक व्यक्ति को मरने के बाद ही होता है अतः उनका ताल्लुक ईमान बिल गैब से है। अलबत्ता उन भविष्य वाणियों में से कुछ का तजकरा कर देना उचित ही होगा जो आप सल्ल0 के जीवन काल में पूरी हो चुकी हैं।

(1) आरंभ में मक्का निवासी हजरत मुहम्मद सल्ल0 के सख्त दुश्मन थे, उन्होंने आप सल्ल0 को आपके साथियों को और आपके संदेश को मिटाने के भरपूर प्रयास किए थे। उस समय की परिस्थितियों में कोई यह नहीं कह सकता था कि आज के दुश्मन कल आप सल्ल0 पर जान निछावर करने वाले बन जायेंगे। मगर कुरआन में पहले ही फरमा दिया गया था कि यह लोग कुछ समय बाद इस सत्य मार्ग को पहचान लेंगे। (38:88)

(2) हजरत मुहम्मद सल्ल0 के जमाने में रोम और ईरान की हुकूमतें आपस में लड़ती रहती थीं। रोमन लोग अहले किताब, ईसाई थे, दूसरी तरफ ईरान वाले आग की पूजा करते थे गोया काफिर थे। मक्का निवासी मुसलमान रोम वालों से अहले किताब होने के कारण हमदर्दी रखते थे जबकि मक्का के काफिर ईरान के पक्षधर थे। रसूलुल्लाह सल्ल0 के ज़माने में एक जंग में रोम वालों की हार हुई तो मक्का के काफिरों ने मुसलमानों को चिढ़ाने के

मकसद से खूब खुशियां मनाईं। मुसलमानों को रोम की हार का दुःख तो था ही काफिरों की उछल कूद से और ज़्यादा दुखी हुए। उस समय मुसलमानों का हौसला बढ़ाने की नियत से रसूलुल्लाह सल्ल0 ने अल्लाह तआ़ला से प्राप्त सूचना के आधार पर पेशीनगोई की, कि ईसाई हुकूमत इस समय हार गई है मगर शीघ्र ही वह अपने दुश्मन यानि ईरान पर फतह हासिल कर लेंगे।

इस युद्ध में रोमियों को इतनी भारी हार हुई थी कि अनकरीब उनका सामान्य हालत में उबर पाना मुश्किल था अतः आप सल्ल0 की इस पेशीनगोई पर यकीन करना आसान न था। उबै बिन ख़लफ़ नाम के व्यक्ति ने तो ऐलान कर दिया था कि है कोई जो मुझसे शर्त लगाए 300 ऊंटों की, सच सिद्ध होने पर मैं दूंगा अन्यथा उसे 300 ऊंट देने होंगे। हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने उसकी चुनौती को कुबूल कर लिया और फिर दुनिया ने देखा कि आठवें वर्ष दोनों हुकूमतों में जंग हुई और रोमियों को फतह हासिल हुई।

एक और बात जो यूहन्ना की इंजील में हजरत ईसा अलै0 के ताल्लुक से कही गई है, कि वह सत्य आत्मा मेरी महिमा– पाकी बयान करेगा। हम देखते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के माध्यम से अल्लाह का पैगाम जो इंसानों तक पहुंचा उस में हजरत ईसा अलै0 और उनकी वालिदा हजरत मरियम की महिमा और पाकी का बयान इतने स्पष्ट और गम्भीर शब्दों में है कि जब वह नजाशी बादशाह के सामने पढ़ा गया, जो ईसाई था, उसने धरती से एक तिनका उठा कर कहा ''खुदा की कसम इस संदेश में हजरत ईसा के बारे में जो कुछ भी कहा गया है वह इस तिनके बराबर भी गलत नहीं है।'' क्या कहा गया है इन आयतों में, सूरः मरियम की आयत नंबर 16–36 में देखा जा सकता है।

इस तरह यह साफ जाहिर है कि हजरत मुहम्मद सल्ल0 वही आखिरी रसूल हैं जिनके आने की पेशनगोई हजरत ईसा मसीह ने खुद अपनी जिन्दगी में दी थी। न्यू टेस्टामेंट– इंजील के 16 वें अध्याय में वाक्य 12 से 14 को एक बार फिर पढ़िए, कहा गया है, ''मुझे तुमसे और भी बहुत सी बातें कहनी हैं परन्तु अभी तुम उन्हें सहन नहीं कर सकते, जब वह सत्य आत्मा आएगा तो तुम्हें श्रेष्ठ सत्य का मार्ग दर्शाएगा, वह अपनी ओर से कुछ न कहेगा, परन्तु जो सुनेगा वही कहेगा और भविष्य में आने वाली बातें तुम्हें बताएगा, वह मेरी महिमा और पाकी बयान करेगा, वह मेरे वचनों को ग्रहण करके तुम पर स्पष्ट करेगा।''

❖❖❖

पृष्ठ ....12......का शेष

एक मर्तबा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सवाल किया गया कि एक शख़्स बहादुरी के लिए लड़ता है, एक राष्ट्र प्रेम के लिए और एक शख़्स जिहाद के लिए तो किस का जिहाद खुदा के लिए है? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः– ''जो ख़ालिस अल्लाह के लिए लड़ता है उसका जिहाद अल्लाह के लिए है।

(मुस्लिम शरीफः 5028)

एक हदीस में इरशाद हैः ''बेशक अल्लाह तुम्हारे जिस्मों को नहीं देखता और न ही तुम्हारी सूरतों को देखता है, लेकिन तुम्हारे दिलों को देखता है और तुम्हारे कामों को देखता है।

(मुस्लिम शरीफः 6707)

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी

प्रश्नः अगर किसी गर्भवती माँ का इंतेक़ाल हो गया, और उसके पेट में बच्चा ज़िन्दा है तो क्या आप्रेशन के ज़रिये उस बच्चे को निकाला जा सकता है या नहीं?

उत्तरः गर्भवती माँ के इंतेक़ाल के बाद अगर जनीन (भ्रूण) के ज़िन्दा होने के यकीनी आसार दिखाई पड़ते हों तो फुकहा ने औरत के आप्रेशन की इजाज़त दी है ताकि बच्चे की जान बचाने की फिक्र की जाय।

(अल मौसूअतुल फिकहिया अल कोयतीया)

प्रश्नः क्या हाथ पैर की नार्मल पाँच उंगलियों से ज़ायद उंगली को काट सकते हैं या नहीं?

उत्तरः अगर किसी व्यक्ति के सामान्य उंगलियों के अलावा अतिरिक्त उंगली निकल आये तो उसको काटा जा सकता है बशर्ते हलाकत का खतरा न हो।

(फतावा हिंदिया 360/5)

प्रश्नः अगर किसी व्यक्ति को ''एड्स'' जैसी घातक और संक्रामक बीमारी लग जाये तो क्या औरत मर्द से अलग होने का दावा कर सकती है या नहीं?

उत्तरः ''एड्स'' का मरीज़ शौहर अपनी बीवी के हक़ में नामर्द के हुक्म में है इसलिए औरत को ऐसे व्यक्ति से अलग होने का दावा करने का पूरा हक हासिल होगा।

प्रश्नः क्या खून न मिलने की सूरत में खून दान करना, या दान में न मिलने की सूरत में खरीदना बेचना जायज़ है?

उत्तरः इंसानी अंग के किसी भी भाग को खरीदना और बेचना जायज़ नहीं, लेकिन किसी की जान बचाने के लिए दान में न मिल सके तो खरीदने की इजाज़त होगी, लेकिन खून बेचना और उसकी कीमत लेना जायज़ नहीं है, हाँ किसी की जान बचाने के लिए दान करना सही है। (अल मब्सूत 127/5)

प्रश्नः आजकल ब्लड बैंक क़ायम हैं और स्वैच्छिक ब्लड दान शिविर लगाये जाते हैं, क्या उसमें ब्लड दान करना सही है जबकि दान करते समय किसी मरीज को ज़रूरत नहीं है?

उत्तरः ऐसे ब्लड बैंक जहाँ लोग स्वैच्छिक खून दान करते हों, और वह ब्लड बैंक ज़रूरतमंदों को मुफ़्त खून प्रदान करते हों तो वहाँ मुसलमानों के लिए खून दान करना सही है, क्योंकि आजकल के हालात में प्राकृतिक और अप्राकृतिक आकस्मिक घटनाएं आए दिन होती रहती हैं और एक ही समय विभिन्न रक्त समूहों की ज़रूरत पड़ती रहती है। इसलिए अगर पहले से ही स्टाक न हो तो ज़रूरतमंदों की जान बचाना मुश्किल हो जाय, इसलिए पहले से खून दान करना सही है।

(अलफिक़्हुल इस्लामी 2614/4)

प्रश्नः क्या सूद (ब्याज़) का पैसा यतीम लड़की की शादी या बीमार व्यक्ति की मदद में खर्च करके सवाब हासिल किया जा सकता है?

उत्तरः ब्याज का पैसा सवाब की नियत से देना गुनाह है, क्योंकि ब्याज का पैसा इस्लाम की निगाह में हराम है और हराम माल से सदक़ा व खैरात करना सदक़े की तौहीन है, हाँ सवाब की नियत के बगैर यतीम लड़की की शादी या बीमार व्यक्ति के इलाज में खर्च किया जा सकता है इस शर्त के शाथ कि वह ज़रूरतमंद हों और उनके पास शादी और इलाज के लिए जायज़ रक़म मौजूद न हो।

(रद्दुल मुहतार 223/7)

शेष पृष्ठ .....33....पर

''अपनों से ग़ैर अच्छे'' कैसे मुम्किन!!
(क़ुरआन व हदीस की रौशनी में)

सैय्यद सुफ़यान अहमद नदवी लखनवी

सहीह बुख़ारी में एक हदीस हैः—

''रहम (रिश्तेदारी) रहमान से जुड़ी हुई है (यानी कि रहम और रहमान आपस में इस तरह से जुड़े हैं जैसे रगें आपस में एक—दूसरे से मिली होती हैं) अल्लाह तआला (रहम से) फ़रमाता हैः जो तुझे जोड़ेगा मैं उसे जोड़ूँगा और जो तुझे काटेगा मैं उसे काट दूँगा।''

इस हदीस की रौशनी में हमें यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि हमें अपने क़रीबी रिश्तेदारों से हमेशा मेलजोल और राब्ता रखना है और उनके सुख—दुख में ज़रूर शरीक होना है, ज़रूरत के वक़्त उनकी मदद करनी है, उनकी ख़ुशियों में शामिल होना है और उनके दुखों में उनका सहारा बनना है और हर—हर मौक़े पर उन्हें याद रखना है।

आज की इस मसरूफ़ ज़िन्दगी में हम देख रहे हैं कि लोगों ने दुनिया के माहौल से असर लेते हुए एक ऐसी सोच बना ली है, एक ऐसा माहौल पैदा कर दिया है कि बहुत से लोग यह कहते रहते हैं कि ''अपनों से तो ग़ैर अच्छे''। लेकिन यह कैसे मुम्किन है कि अपनों से ग़ैर अच्छे हों। अगर हम इस जुमले पर ग़ौर करें और गहराई में उतर कर देखें तो हमें क़ुरआन और अहादीस की रौशनी में वाज़ेह तौर पर ऐसी क़ुरआनी आयात, ऐसी अहादीस और ऐसी हिदायात मिलेंगी जिन से यह समझ में आता है कि अपने, अपने ही होते हैं, ग़ैर अपनों से बेहतर नहीं हो सकते। वैसे इसका मतलब यह नहीं है कि ग़ैर अच्छे नहीं हो सकते, ग़ैर भी अच्छे और बेहतर हो सकते हैं और बाज़ दफ़ा होते भी हैं, यह एक अलग मामला है, लेकिन अपनों के मुक़ाबले में उनको न परखा जाए तो ही बेहतर होगा।

अगर हम अपनों से ग़ैरों को अच्छा मानते हैं तो हम क़ुरआन व हदीस के ख़िलाफ़ जा रहे हैं। अल्लाह तआला तो आलिमुल ग़ैब है, उसने इन्सान को बनाया, उसकी फ़ितरत को बनाया, उसके माज़ी हाल मुस्तक़बिल सबको अच्छी तरह जानता है। वह यह भी जानता है कि इन्सान आगे जाकर क्या करेगा, किसके साथ किस तरह राब्ता व ताल्लुक़ रखेगा। अल्लाह ने क़ुरआन मजीद में पचासों जगह पर सिल—ए—रहमी और ताल्लुक़ को जोड़ने से मुताल्लिक़ आयात नाज़िल फ़रमाई हैं, क्यों? क्योंकि अल्लाह तआला जानता है कि इन्सान की फ़ितरत ही ऐसी है कि इन्सान अपनों से दूरी बनाकर ख़ुद को ग़ैरों से जोड़ने की कोशिश करेगा, अपनों के ज़रिये दी गई तकलीफ, परेशानी, दुख या कमी—ज़्यादती की वजह से उन से भागेगा और दूर—दूर रहने की कोशिश करेगा, यह इन्सान की फ़ितरत है। इसी लिए अल्लाह तआला ने बार—बार क़ुरआन मजीद में रिश्ते को जोड़े रखने का हुक्म दिया है, ज़ोर दिया है, ताकि इन्सान अपने रब और अपने रसूल की तालीमात की अहमियत को समझते हुए उन पर अमल करने की कोशिश करे।

क़ुरआन मजीद में आया हैः—

''अल्लाह इंसाफ़ करने और हुस्ने सुलूक करने और नातेदारों को अता करने का हुक्म देता है।''

(सूरः नहल, आयतः 90)

आयत में नातेदारों के साथ सुलूक करने का हुक्म दिया जा रहा है ताकि इन्सान उन से कुरबत बनाए, दूरी न पैदा करे, जोड़ पैदा करे तोड़ नहीं।

अपनों यानी रिश्तेदारों से सिल–ए–रहमी का मतलब यह है कि उनके साथ हुस्ने सुलूक करना, अपनी ताक़त भर उनकी माली मदद करना, उन से मेल–जोल रखना, उन से मुलाक़ात के लिए जाना, उनके साथ बेहतर से बेहतर ताल्लुक़ात क़ायम रखना, उनकी हमदर्दी व ख़ैरख़्वाही करना वग़ैरा–वग़ैरा। और इसमें उसूल (जैसे माँ और माँ से ऊपर के वालिदैन, इसी तरह बाप और बाप के ऊपर के वालिदैन) और फ़ुरू (जैसे बेटा–बेटी और बेटे–बेटी की औलाद) वग़ैरा। और साथ ही क़रीब व दूर के बक़िया तमाम रिश्तेदार भी शामिल हैं। अलबत्ता जो ज़्यादा क़रीब है उसका हक़ पहले है।

और मोमिनीन की निशानियों में से भी है कि वह सिल–ए–रहमी को क़ायम रखते हैं, रिश्ते को जोड़े रखते हैं, चुनांचे सूरए रअद में इरशादे रब्बानी है:

''और वह लोग ऐसे हैं कि अल्लाह ने जिन रिश्तों के क़ायम रखने का हुक्म दिया है, उनको क़ायम रखते हैं और अपने रब से डरते हैं और सख़्त अज़ाब का अन्देशा रखते हैं।''

(सूरः रअद, आयतः 21)

और इसी सूरह में आगे फ़रमायाः– ''और बुराई का बदला भलाई से देते हैं, इन्हीं लोगों के लिए आख़िरत का बेहतरीन घर होगा।''

(सूरः रअद, आयतः 22)

मतलब यह है कि यह बेहतरीन मक़ाम यानी जन्नत उन्हीं लोगों के लिए होगी जो बुराई करने वाले रिश्तेदारों के साथ भी भलाई का सुलूक करेंगे।

और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी बीसियों अहादीस में इसका ज़िक्र किया है कि अपनों से मेल करके रहो, अपनों के साथ रहो, अपनों से जुड़े रहो, अपनों के हुक़ूक़ का ख़याल रखो, अपनों से हुस्ने सुलूक करो, अपनों पर एहसान करो।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैंः– यानी किसी को किसी चीज़ का बदला दिया जाना सिल–ए–रहमी नहीं है बल्कि सिला रहमी करने वाला वह है जिसके साथ क़ता रहमी की जा रही हो लेकिन फिर भी वह अपने रिश्तेदारों से सिला रहमी करे। (सहीह बुख़ारी)

चुनांचे सिल–ए–रहमी को एक जगह सबसे अफ़ज़ल अमल बताया गया है, एक हदीस में है, हज़रत उक़बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हू बयान करते हैंः मेरी अल्लाह के रसूल सल–लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुलाक़ात हुई, मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे सबसे अफ़ज़ल अमल बताइये, आपने फ़रमायाः ऐ उक़बा! जो तुम से क़ता ताल्लुक़ करे, उससे ताल्लुक़ जोड़ो, जो तुम्हें महरूम करे, उसे अता करो और जो तुम पर ज़ुल्म करे, उसे दरगुज़र करो (और एक रिवायत में हैः उसको माफ़ करो)।

(मुस्नद अहमद)।

एक हदीस में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हू बयान करते हैंः अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जो तुम से रिश्ता तोड़े उस से रिश्ता जोड़ो और जो तुम से बुरा सुलूक करे उस से अच्छा सुलूक करो। (जामेउस्सग़ीर)

अगर हम अपनों से सिल–ए–रहमी करने से मुताल्लिक़ आयात व अहादीस को जानते हैं और मानते भी हैं तो हमें उन पर अमल भी करना ज़रूरी होगा। फिर हम यह नहीं कह सकते कि ''अपनों से तो ग़ैर अच्छे'', क्योंकि फिर तो यह जुमला क़ुरआन व अहादीस के ख़िलाफ़ ही होगा कि अल्लाह और उसके रसूल तो हमें क्या तालीम दे रहे हैं और हम क्या

अमल कर रहे हैं, तो गोया कि हम अल्लाह के इल्मे ग़ैब पर शक कर रहे हैं कि नहीं! (नऊज़ुबिल्लाह सुम्मा नऊज़ु बिल्लाह) क्या अल्लाह को ग़ैरों की अहमियत नहीं मालूम थी, ग़ैरों के साथ सुलूक के बारे में नहीं पता था, कि उसने इन्सानों को कुरआन व अहादीस में अपने रिश्तेदारों के साथ बेहतरीन सुलूक करने का हुक्म दिया ''नऊज़ुबिल्लाह'', और हम ग़ैरों की अहमियत को अहम जान रहे हैं। और ग़ैरों को अपने क़रीबी रिश्तेदारों से बेहतर मान रहे हैं।

बेशक इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि बाज़ औक़ात ग़ैर भी ऐसी मोहब्बत, ऐसी अपनाईयत से पेश आते हैं कि वह सुलूक के मामले में अपनों से भी आगे निकल जाते हैं, तो यह ख़ुद उस इन्सान की ख़ुश क़िस्मती और ख़ुदा की तरफ़ से उसके लिए एक बेहतरीन नेमत है कि ग़ैर भी उसके साथ बेहतरीन मामला करते हैं और बेहतर से बेहतर सुलूक करते हैं।

अहादीस में यह बात भी आती है कि दुनिया में ख़ासतौर पर दो गुनाह ऐसे सख़्त हैं जिनकी सज़ा न सिर्फ़ यह कि आख़िरत में होगी, बल्कि दुनिया में भी सज़ा सामने आ जाएगीः एक ज़ुल्म की, दूसरे क़ता रहमी की। (इब्ने माजह, तिर्मिज़ी)

मौजूदा दौर में हमारे मुआश्रे और समाज में क़ता रहमी बेइन्तिहा बढ़ती जा रही है, अच्छे–अच्छे और दीनदार लोग भी अपने रिश्तेदारों के हुक़ूक़ का पास व लिहाज़ नहीं करते। जबकि रिश्तेदारों के शरीअत में बहुत से हुक़ूक़ बयान किये गये हैं और उन पर कामयाबी व कामरानी की ख़ुशख़बरी भी सुनाई गई है। चुनांचे कुरआने करीम में इरशादे रब्बानी हैः– ''तो क़राबतदार एवं नातेदार को उसका हक़ दिया करो और मिस्कीन और मुसाफ़िर को। यह उन लोगों के हक़ में बेहतर है जो अल्लाह की रज़ा चाहते हैं और यही लोग कामयाब होने वाले हैं।''

(सूरः रूम, आयतः 35)

रिश्तों को जोड़ने की अहमियत के संदर्भ में यह बात भी क़ाबिले ज़िक्र है कि अल्लाह के रसूल सल–लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने मज़हब के तो छोड़िये ग़ैर मज़हब के भी अपने क़रीबी रिश्तेदारों के साथ बेहतरीन सुलूक करने का हुक्म दिया, जैसा कि एक हदीस में बयान हुआ हैः–

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा की बड़ी बहन हज़रत अस्मा बिन्ते अबी बक्र रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैंः–

अनुवादः मेरी वालिदा हालते शिर्क में मक्का से मदीना आईं, कुरैश के साथ सुलह के ज़माने में (यानी सुलह हुदैबिया के ज़माने में)। मैंने अल्लाह के रसूल से सवाल कियाः ऐ अल्लाह के रसूल! बेशक मेरी वालिदा मेरे पास आई हैं, जबकि वह इस्लाम के कुबूल करने में कोई दिलचस्पी नहीं रखतीं, क्या मैं उनके साथ अच्छा सुलूक करूँ? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः हाँ! उनके साथ अच्छा सुलूक करो।''

इस हदीस से पता चलता है कि क़रीबी रिश्तेदार अगर मुश्रिक भी हो तब भी इस्लाम में उसके हुक़ूक़ की रिआयत और उसके साथ हुस्ने सुलूक का ही मामला किये जाने का हुक्म है।

जब अल्लाह के रसूल ग़ैर मज़हब वाले रिश्तेदार के साथ हुस्ने सुलूक करने पर ज़ोर दे रहे हैं तो अन्दाज़ा लगाइये कि जो अपने मज़हब के ही अपने रिश्तेदार हों तो उनके साथ हुस्ने सुलूक का मामला करने पर कितना ज़ोर होगा।

अपने रिश्तेदारों से अच्छा बर्ताव करने के बेहतरीन नताएज अहादीस में बयान हुए हैं जिनमें से कभी सिल–ए–रहमी को रोज़ी में बढ़ोत्तरी का सबब बताया गया, कभी रिश्तेदारों में आपस

में मोहब्बतों के परवान चढ़ने का सबब बताया गया, रहमतों के नुज़ूल का सबब बताया गया, कभी इन्सान की उम्र दराज़ होने का सबब बताया गया, कभी बाराने रहमत के नुज़ूल का सबब बताया गया, कभी जहन्नम के अज़ाब से ख़लासी का सबब बताया गया, और कभी जन्नत जैसी अज़ीम नेमत के हुसूल का सबब बताया गया है।

इसी तरह सिल–ए–रहमी के मुक़ाबले में क़त–ए–रहमी के बुरे नताएज भी बयान हुए हैं, जैसा कि एक हदीस में आया हैः

''उस क़ौम पर रहमत नाज़िल नहीं होती जिसमें क़त–ए–रहमी करने वाला हो।''

(शुअबुल ईमान)

इस हदीस में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रिश्तेदारों से बेहतरीन सुलूक की अहमियत बताने के साथ–साथ यह भी फ़रमा रहे हैं कि तुम में से जो भी अल्लाह तआला की रहमत का नुज़ूल चाहता हो, उसे चाहिए कि अपने क़रीबी रिश्तेदारों के साथ अच्छे से अच्छा सुलूक करे।

और इसके ख़िलाफ़ करने पर इतनी बड़ी वईद भी बयान की गई है कि एक रिवायत में अल्लाह के रसूल सल–लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः– ''क़ता रहमी करने वाला जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।''

आज हमें और आपको ख़ूब ग़ौर व फ़िक्र करने की ज़रूरत है कि हमारा समाज कहाँ जा रहा है और क्या कर रहा है? आज हम और आप नये–नये दोस्त बनाते हैं और अपनी तरफ़ से नये–नये रिश्ते बनाते जाते हैं और फिर उन बनाए हुए रिश्तों को हम अपने क़रीबी रिश्तेदारों से बढ़ कर तरजीह देते हैं और अपने क़रीबी रिश्तों को भूल जाते हैं जो रिश्ते हमें अल्लाह की तरफ़ से अता हुए हैं उनको पसे पुश्त डाल देते हैं और अपने रब व अपने रसूल की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ जाकर अपने बनाए हुए रिश्तों को अहमियत देते हैं और फिर कहते हैं कि ''अपनों से तो ग़ैर अच्छे''।

इसका यह मतलब बिल्कुल नहीं है कि ग़ैर रिश्तेदार से, या मिलने–जुलने वालों से, या दोस्तों से ताल्लुक़ात न बनाए जाएं, उनके साथ मेलजोल न रखा जाए। नहीं! बल्कि ग़ैरों से भी अच्छा मामला किया जाए, उन से भी ताल्लुक़ात को मज़बूत रखा जाए, उनके साथ भी अच्छा सुलूक किया जाए और उनके साथ ही साथ अपने रिश्तेदारों को भी हमेशा याद रखा जाए और उनके हुक़ूक़ की भी पासदारी की जाए और उनको तरजीह दी जाए। जिसका मतलब यह है कि जो हमारे अपने रिश्तेदार हैं उनका हक़ हमेशा दूसरों से ज़्यादा होगा।

अल्लाह तआला हमें और आपको अपना मुहासबा एवं आत्ममन्थन करने वाला बनाए, इस सिलसिले में होने वाली कोताहियों को माफ़ फ़रमाये, अपने रिश्तों की अहमियत को समझने वाला, उनके साथ हुस्ने सुलूक करने वाला, उनकी ख़ताओं और ग़लतियों को दरगुज़र करने वाला और उन से मुताल्लिक़ अल्लाह व रसूल के बताए हुए तरीक़ों पर अमल करने वाला बनाए।

❖❖❖

पृष्ठ ....29......का शेष

प्रश्न: आज कल लोगों में बिला ज़रूरत क़र्ज़ लेने का काफी चलन हो गया है, क्या बिला मजबूरी भी कर्ज लेना जायज़ है?

उत्तर: हदीसे नबवी से यह बात मालूम होती है कि कर्ज लेना कोई पसंदीदा काम नहीं है और जब तक कोई वास्तविक ज़रूरत न हो इससे बचना चाहिए, नबी करीम सल्ल0 कर्जदार बनने से अल्लाह की पनाह मांगा करते थे।

(सहीह बुखारी शरीफः 2397)

❖❖❖

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ि0
की जीवनी पर एक नज़र

मुहम्मद इक़बाल नदवी

हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ि0 इस्लाम की वह महान हस्ती हैं जिन्हें अल्लाह ने विशेष ज्ञान, उच्च नैतिकता व आचरण प्रदान किये आप नबी करीम सल्ल0 की पत्नी और इस्लाम के पहले खलीफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 की पुत्री थीं, आपका लक़ब सिद्दीक़ा और उपाधि उम्मुल मोमिनीन (ईमान वालों की माँ) थी।

प्रारम्भिक जीवनः—

आपका जन्म हुजूर सल्ल0 के नबी बनाये जाने के चार साल बाद 613 ई0 में मक्का में हुआ बचपन से ही अत्यन्त बुद्धिमान उच्च विचार वाली थीं खुदा तआला ने आपको कुरआन और हदीस का ज्ञान इस प्रकार प्रदान किया कि कोई भी मामला होता उसकी गम्भीरता को बहुत जल्द समझ लेती थीं। आपका विवाह नबी करीम सल्ल0 के साथ 6 वर्ष की आयु में हुआ और रुख़सती नौ वर्ष की उम्र में हुई।

ज्ञान और समझदारी में स्थानः—

आप इस्लामी इतिहास की सबसे महान महिला विद्वानों में गिनी जाती हैं आपने मुहम्मद सल्ल0 से बहुत ज्ञान सीखा और आप से 2210 हदीसें रिवायत कीं आपको इस्लामी कानून का बहुत ज्ञान था मदीना मुनव्वरा की मुस्लिम औरतें आपसे घरेलू और मियाँ—बीवी से सम्बन्धित बहुत सी जानकारियाँ हासिल करतीं, बड़े—बड़े सहाबा कठिन मामलों में आपसे मार्गदर्शन लेते थे आपको फिक्ह (इस्लामी क़ानून, हदीस चिकित्सा और अरबी साहित्य में विशेष पकड़ और ज्ञान था, इस्लामिक विद्वानों का कहना है कि अगर हज़रत आयशा रज़ि0 का विवाह नबी करीम सल्ल0 से ना होता तो सम्पूर्ण इस्लामी ज्ञान का एक तिहाई हिस्सा हमारे सामने ना आ पाता, और मुस्लिम समाज बहुत से दीनी व दुनियावी मसलों से वंचित रह जाता वह कुरआन की व्याख्या में बहुत माहिर थी, वह कुरआन की आयतों के अवतरित होने के बारे में अच्छा ज्ञान रखती थी। अनेकों बड़े सहाबा जैसे हज़रत उमर और हज़रत अली रज़ि0 आदि उनसे विचार विमर्श किया करते थे। और उनकी राय को वरीयता देते थे। उन्होंने अनेकों प्रकार के इस्लामिक नियमों और क़ानून की व्याख्या की जो इस्लामिक क़ानून का दर्जा रखते हैं।

उनका घर एक मदरसा था जहाँ सहाबा और ताबईन (सहाबा की पैरवी करने वाले और उनको देखने वाले) इस्लाम का ज्ञान हासिल करने आते थे। वह अपनी बात को बहुत स्पष्ट रूप से पेश करती थीं। उनकी याददाश्त बहुत तेज़ थी, उनकी बयान की हुई हदीसें, इबादत अच्छे अख़लाक़, विरासत, घरेलू इलाज और ज़िन्दगी में मार्गदर्शक हैं। नबी सल्ल0 के घरेलू जीवन के ज्ञान का स्रोत उनकी ही हदीसें हैं।

तालीम व तरबियत में उनकी हस्ती इतिहास की महान हस्तियों में है क्योंकि उनसे ज्ञान लेने वाले सहाबा और ताबईन की संख्या लगभग 300 की बताई जाती है। जिन्होंने सम्पूर्ण मुस्लिम समुदाय को अपने ज्ञान से लाभ पहुंचाया।

आपके जीवन की मुख्य घटनायें:—

1. जंगे बद्र और जंगे उहद में आप मुजाहिदीन के लिए पानी पहुंचाती थीं और जो जख़्मी हो जाते उनकी मरहम पट्टी करने में सहयोग करती और मुसलमानों का हौसला बढ़ाती थीं।

2. आपके जीवन में एक ऐसी घटना उत्पन्न हुई जिसने

आपको झिंझोड़ कर रख दिया उसको वाक्या इफ्क (इल्जाम की घटना) कहते हैं, मुनाफिकों ने आपकी इज़्ज़त और आपकी पवित्रता पर झूठा आरोप गढ़ने और सवालिया निशान लगाने का प्रयास किया, यह घटना इस्लामी समाज के लिए बहुत बड़ी परीक्षा थी, अल्लाह तआ़ला ने सूरः नूरः 11–20 की आयतें) अवतरित करके उनकी पवित्रता का ऐलान किया और झूठ बोलने वालों की निन्दा की और सख़्त चेतावनी दी कि भविष्य में किसी पाक औरत पर उंगली उठाने से बचें। अल्लामा सय्यद सुलैमान नदवी रह0 अपनी किताब सीरते आयशा में लिखते हैं, कि राम की सीता हों या ईसा की माँ मरयम हों या मुहम्मद सल्ल0 की आयशा हों यह वह नाजुक शीशे हैं इनकी ओर पत्थर फेंकने से नहीं बल्कि पत्थर से इशारा करने में भी टूट जाते हैं और फिर वह शीशा जुड़ भी जाय तब भी वह कमज़ोर हो जाता है।

नबी करीम सल्ल0 की आखिरी बीमारीः–

आप सल्ल0 ने अपनी आखिरी बीमारी में अधिक समय हज़रत आयशा रज़ि0 के साथ गुज़ारा जब आप का इंतिक़ाल हुआ तो आप का सर मुबारक हज़रत आयशा की गोद में था।

जंगे जमल का वाक्या 36 हिज्रीः–

हज़रत उस्मान रज़ि0 की शहादत के बाद अनेकों समस्याऐं उत्पन्न हो गई जिनके निवारण के लिए आपने बहुत प्रयास किये परन्तु उसका कोई निवारण हो नहीं पाया, बहुत से सहाबा चाहते थे कि हज़रत उस्मान के कातिलों को सख़्त सजा मिले दूसरी ओर नये ख़लीफ़ा हज़रत अली ने कहा कि हालात कुछ शांत हो जाने दीजिए फिर उनके हत्यारों को दण्डित किया जायेगा, हज़रत आयशा का पक्ष था कि पहले उस्मान के क़ातिलों को सजा दी जाए, हज़रत अली और हज़रत आयशा के बीच सुलह समझौता के बहुत प्रयास हुए परन्तु कुछ लोग नहीं चाहते थे कि दोनों में सुलह हो और वही लोग हज़रत उस्मान के क़ातिल भी थे, इन लोगों ने दोनों तरफ रात में हमला कर दिया दोनों पक्षों ने समझा कि हमला एक दूसरे की तरफ से किया गया इसी गलतफहमी में लड़ाई छिड़ गई जिसके कारण बहुत से मुसलमान शहीद हो गये। हज़रत अली रज़ि0 ने हज़रत आयशा को इज़्ज़त और सम्मान के साथ मदीना वापस भेज दिया, इस लड़ाई में हज़रत आयशा ऊँट पर सवार थी इसी लिए इसको जंगे जमल कहते हैं। बाद में उनको बहुत अफसोस हुआ कि उन्होंने हज़रत अली के खिलाफ जंग में हिस्सा लिया।

अंतिम जीवन और निधनः–

अपने जीवन के अंतिम वर्षों में आप मदीना में महिलाओं तथा पुरूषों को दीन का ज्ञान सिखाती रहीं, 17 रमज़ान 58 हिज्री में आप ने अंतिम साँस ली, आपकी वसीयत के मताबिक जन्नतुल बकीअ़ के कब्रिस्तान में दफन किया गया।

मुख्य विशेषताऐंः–

आप हुजूर सल्ल0 की सबसे चहेती पत्नी थीं फिर भी आपने नबी सल्ल0 की समस्त पत्नियों के साथ सदैव अच्छा व्यवहार किया आपने हुजूर सल्ल0 के जीवन को बहुत करीब से देखा और उसको सुरक्षित करके समस्त मुस्लिम जगत को उससे फायदा उठाने का अवसर प्रदान किया जिसे हम सब नबी सल्ल0 की सुन्नत के नाम से जानते हैं। हुजूर सल्ल0 की तहज्जुद की नमाज़, रोज़े, दुआओं के बारे में विस्तार से बताया। आप उम्मते मुस्लिमा (समस्त मुस्लिम जगत) के लिए एक महान आदर्श हैं। खुद नबी करीम सल्ल0 ने उनको ज्ञान व विवेक में आगे बताया।

समस्त मुस्लिम समाज को चाहिए की वह आपके जीवन को गहराई से पढ़े ताकि घर समाज खानदान के जीवन में निखार आए जो दूसरों के लिए मार्गदर्शन बने।

❖❖❖

एक इन्सान दो जिन्न

मायल ख़ैराबादी

जिन्नों के बादशाह ने जिन्नों के सामने इन्सानों की तारीफ़ की तो सबसे अधिक झन–झन जिन्नी और घन–घन जिन्नी को बुरा लगा। वह अपनी अपनी जगह बड़बड़ाने लगे वाह जरा सा इन्सान, हम जब चाहें उसे मुट्ठी में दबाकर मार डालें। हम आग से बने हैं इन्सान मिट्टी से। हम में वह ताक़त है कि हम पहाड़ उठा लें। हमारे सामने आदमी ऐसा है जैसे पहाड़ के सामने चींटी, वाह यह भी खूब रही कि बादशाह सलामत इन्सान को हमसे बढ़ कर बताते हैं इनमें तो ये ताक़त है कि हम शेर बन कर आदमी को डरा दें। हम में ये ताक़त है कि हम आदमी के जिस्म में घुस कर बीमारियाँ पैदा कर दें हम ये भी तो कर सकते हैं कि आदमी को पागल बना दें। भला ये इन्सान हम से बढ़ कर कैसे हो सकता है?.........।

झनझन जिन्नी और घन घन जिन्नी की बड़बड़ाहट बादशाह ने सुनी– वह दोनों को समझाने लगा कि खबरदार आदमी का मुक़ाबला न करना। अल्लाह ने इसको सबसे ज़्यादा समझ दी है। आदमी देखने ही में छोटा है मगर समझ लो वह इल्म और अक़्ल का पुतला है। तुम उससे जीत नहीं सकते!

''वाह कैसे नहीं जीत सकते......'' झनझन जिन्नी और घनघन जिन्नी ने बादशा को उत्तर दिया, ''अच्छा मुक़ाबला करवा कर देख लीजिये, आप कहिये तो हम उसकी मुफ़्त नौकरी कर के नाक में उसके दम कर दें।''

''अच्छी बात है।'' जिन्नों के बादशाह को दोनों की घमण्ड भरी बातें पसन्द न आईं। उसने कहा, ''अच्छा जाओ, एक आदमी को उठा लाओ।''

झनझन और घनघन पल भर में एक आदमी को उठा लाये और बादशाह के सामने ला खड़ा किया।

बादशाह ने जिन्नों को आदेश दिया कि सब जिन आदमी की शक़्ल के बन जायें, वैसे तो आदमी हमें देख नहीं सकता, इसके बाद तुम्हारा और उसका मुक़ाबला होगा।

बादशाह के आदेशनुसार सब जिन आदमी की सूरत में आ गये और अब आदमी ने देखा कि वह एक दरबार में है और सामने बादशाह बैठा है और आस पास बड़े डील डौल के लोग बैठे हैं। आदमी डरा, उसकी समझ में न आया कि वह कहाँ और कैसे आ गया और क्यों लाया गया है? उसने बादशाह को सलाम किया, बादशाह ने उससे कहाः–

''देखा, हम सब जिन्नात हैं, तुम हमें वैसे तो देख नहीं सकते थे, इसलिये हम सब आदमी की सूरत में तुम्हारे सामने आ गये हैं। उधर देखो! वे दो जिन तुम्हें उठा लाये हैं। वे दोनों तुम्हारी नौकरी मुफ़्त करेंगे, तुमको यहीं एक मकान रहने को दिया जायेगा, अगर तुमने इनसे नौकरी करा ली तो तुमको इनआम देकर वापस कर दिया जायेगा, वर्ना दोनों जिन तुम्हें खा जायेंगे।''

बेचारा आदमी बहुत परेशान हुआ, फिर सोचने लगा कि यह क्या बात है कि जिन मेरी नौकरी करेंगे और वह भी मुफ़्त में। उसने सोचकर बादशाह से कहा कि जो आपकी इच्छा, मगर शर्त यह है कि दोनों जिन मेरा कहना नहीं टालेंगे।

बादशाह ने कहा, ''हाँ, ये दोनों वही करेंगे जो तुम कहोगे'' लो भई यह बात पक्की हो गई। बादशाह ने आदमी को रहने के लिये एक मकान दे दिया।

आदमी झनझन जिन्नी और घनघन जिन्नी के साथ मकान में गया। दोनों को हुक्म दिया कि मकान साफ करो। दोनों जिनों ने मकान साफ़ कर दिया। उसने फिर हुक्म दिया, ''कमरे

सजाओ।'' जिनों ने जरा सी देर में कमरे सजा दिया, पलंग, कुर्सी, मेज़ और हर तरह का सामान जुटा दिया और आकर बोले, "अब क्या हुक्म है''

आदमी ने कहा, "अब जाओ खाना लाओ''।

जिनों ने मिनट भर में तरह तरह का खाना हाजिर कर दिया। आदमी खाना खाने लगा तो जिन बोले, अब क्या हुक्म है, हमसे काम लो। ''अब तो आदमी सोचने लगा कि इनसे क्या काम ले। उसने हुक्म दिया, ''जाओ, कश्मीर से सेब ले आओ।'' दोनों ने चुटकी बजाते कश्मीर के सेब ला हाजिर किये और बोले, ''अब क्या हुक्म है, हम से काम लो।''

आदमी ने फिर सोच कर कहा, ''अच्छा, अब जाओ अमेरिका से दूध का डिब्बा ले आओ।'' यह कह कर आदमी ने लुक़्मा (ग्रास) मुँह में डाला, अभी लुक़्मा चबा कर निगला भी न था कि दोनों अमेरिका से दूध का डिब्बा ले आये और बोले, ''अब क्या हुक्म है, हमसे काम लो।''

अब तो आदमी परेशान होने लगा। दिल में सोचा कि इतनी जल्दी ये काम करेंगे तो नाक में दम कर देंगे, मगर काम तो लेना ही है। उसने कुछ सोच कर कहा, ''अब जाओ मक्का से ज़मज़म का पानी ले आओ'' दोनों जिन मिनट भर में ज़मज़म का पानी ले आये और फिर काम की रट लगा दी। आदमी सोचने लगा कि अब मालूम हुआ कि मुझे मुश्किल में फँसा दिया गया है। जैसे तैसे दिन भर तो वह काम बताता रहा। रात को सोने चला तो जिनों ने कहा कि काम बताइये। आदमी ने कहा, ''अब तो मैं सोने जा रहा हूँ, अब काम कैसा?'' जिनों ने कहा, ''यह हम कुछ नहीं जानते, काम बताओ''।

अब तो आदमी उनसे पीछा छुड़ाने का उपाय सोचने लगा। वह सोचते सोचते उकता गया तो उसने खुदा से दुआ की, ''ऐ अल्लाह! इनसे पीछा छुड़ा।'' दुआ के बाद उसने ''कुल अऊज़ो बिरब्बिलन्नास'' पढ़ी अपने ऊपर दम किया, जैसे ही उसने दम किया एक उपाय उसे सूझ गया। उसने झनझन जिन्नी से कहा, ''तुम जाकर चालीस पचास मीटर का एक बाँस ले आओ'' घनघन जिन्नी से कहा, ''तुम जाकर एक कुत्ता ले आओ'' दोनों जिन मिनट भर में बाँस और कुत्ता ले आये और बोले काम बताओ। आदमी ने झनझन जिन्नी को हुक्म दिया कि झट बाँस गाड़ दो और जबतक मैं दूसरा हुक्म न दूँ इस बाँस पर चढ़ते और उतरते रहो।'' घनघन जिन्नी को हुक्म दिया कि तुम इस कुत्ते की दुम सीधी करो जब दुम सीधी हो जाये तो मुझे दिखाओ।

दोनों जिन अपने अपने काम पर लग गये। झनझन जिन्नी ने बाँस गाड़ा और उस पर चढ़ने उतरने लगा। घनघन जिन्नी कुत्ते की दुम सीधी करने लगा। वह दुम पकड़ कर खींचता तो कुत्ता भोंक कर काटने दौड़ता। घनघन जिन्नी दुम छोड़ देता तो फिर वैसे, सुबह को जब आदमी जागा तो उसने देखा कि झनझन जिन्नी बाँस पर बहुत सुस्ती से चढ़ और उतर रहा है। और घनघन जिन्नी कुत्ते की दुम सीधी न कर सका। कुत्ता कभी दुम नीची करके पिछली टांगों के बीच ले जाता और कभी ऊपर उठा देता।

आदमी यह देखकर मुस्कुराया। अब वह चैन से पड़ कर सो गया। झनझन जिन्नी रातभर बाँस पर चढ़ता उतरता रहा। वह चढ़ते उतरते थक गया। घनघन जिन्नी बार बार कुत्ते की दुम सीधी करता मगर न कर सका। वह आदमी दोनों पर बहुत बिगड़ा। सड़ाक सड़ाक दस बीस बेंत लगाये। उसके बाद पानी खाना और दूसरी चीजें मांगी। दोनों ने ज़रूरत की सब चीजें हाजिर कर दीं और चाहा कि जरा सुस्ता लें कि आदमी ने हुक्म दिया, ''हाँ, फिर अपने अपने काम पर चालू हो जाओ।'' झनझन जिन्नी फिर बाँस पर चढ़ने उतरने लगा और घनघन जिन्नी कुत्ते की दुम सीधी करने लगा।

शेष पृष्ठ .....39....पर

वैवाहिक संबंध

दिलों में फ़र्क़ आजाए तो रिश्ते निभाए नहीं घसीटे जाते हैं

(शाहाना ख़ानम हैदराबाद)

जब ज़िन्दगी अल्लाह की अमानत है तो फिर हमें वही करना चाहिए जो अल्लाह को पसन्द हो, इन्सान का न तो सासों पर कोई बस है और न ही अपनी तक़दीर पर, लेकिन अगर इन्सान अपनी मर्ज़ी को अल्लाह की मर्ज़ी में शामिल करले तो दिल को सुकून मिल जाता है। दुआ ये होनी चाहिए कि अल्लाह अपनी रज़ा को हमारी रज़ा बना दे और हमसे वह काम न करवाये जो उसे नापसन्द है।

ज़िन्दग़ी से मौत तक इन्सान को कई तरह के कामों और रास्तों से गुज़रना पड़ता है, हर रास्ते में कुछ सुकून होता है या कुछ तकलीफ़ें और अकसर इन रास्तों पर चलने की कुछ कीमतें भी चुकानी पड़ती हैं। रिश्तों को निभाने के लिए बड़े–बड़े वादों और क़समें खाने की ज़रूरत नहीं होती, बस एक दूसरे के लिए सच्चा और ईमानदार होना काफ़ी होता है, चाहे रिश्ता दोस्ती का हो, महब्बत का हो या सिर्फ़ एक एहसास का, अक्सर जहां ज़्यादा वादे होते हैं वहीं रिश्ते जल्दी टूट जाते हैं। जो लोग रिश्ते निभाने वाले होते हैं वे न तो बड़ी–बड़ी बातें करते हैं और न ही हर बात का हिसाब रखते हैं। वे ख़ामोशी से रिश्तों को निभाते हैं और यह भी महसूस नहीं होने देते कि वह ख़ुद किन मुश्किलों से गुज़र रहे हैं। जब कभी आप उन्हें पुकारेंगे, वे आपके साथ एक साये की तरह मौजूद रहेंगे।

औरत का यह फ़ितरी हक़ है कि उसे अपने शौहर के घर में हिफ़ाज़त मिले उसकी इज़्ज़त जान माल और ईमान की हिफ़ाज़त उसे महसूस होना चाहिए कि यह उसका घर है, उसका सब कुछ यही है क्योंकि उसके शौहर ने उसे कुबूल किया है, औरत भी इन्सान है। उसमें कुछ कमज़ोरियां हो सकती हैं, लेकिन अगर मर्द उसे सिर्फ इन कमज़ोरियों की वजह से ठुकरा दे तो वह अपने घर को कभी अपना घर नहीं समझेगी, वह न तो दिल की बातें बताएगी और न ही खुलकर ज़िन्दग़ी जी सकेगी, यह उसका हक़ है कि उसे यह यकीन दिलाया जाए कि उसकी अच्छाइयों की क़द्र की जाएगी और कमज़ोरियों को माफ़ किया जाऐगा, वह चाहे सेहतमन्द हो या बीमार, हर हाल में उसे अपनाया जाएगा, ये नहीं होना चाहिए कि वह बीमार हो जाए तो कहा जाए कि अपने मायके चली जाओ, या बच्चा होने का समय आए तो उसे मायके भेज दिया जाए, ऐसे हालात में औरत को अपने घर में सुरक्षा और अपना पन महसूस नहीं होता, वह सोचती है कि जब तक मैं ठीक हूं तभी मुझे रखा जाएगा, लेकिन अगर मैं बीमार हो जाऊँ या मेरी ज़रूरतें बढ़ जाएं तो मुझे नकार दिया जाएगा। ऐसी औरत कभी चैन से नहीं जी सकती और हमेशा असुरक्षा के एहसास में जीती है। फिर ऐसी औरत से अच्छे और बेहतर व्यवहार या काम की उम्मीद नहीं की जा सकती। इसलिए औरत का हक़ है उसे अपने शौहर के घर में पूरी सुरक्षा और सम्मान मिले, शौहर को यह सोचना चाहिए और सास–ससुर को भी यह सोचना चाहिए कि जिस बेटी को अपने घर लाए हैं, उसे हम सुरक्षा भी देंगे, क्योंकि कल को हमारी बेटी भी किसी न किसी और के घर जाएगी और इससे भी अहम बात यह है कि अगर तुम किसी की बेटी के साथ ज़्यादती करोगे तो उस ख़ुदा से कैसे बच पाओगे जिसने अपने ऊपर इन्सान को लाज्मी कर रखा है।

औरत कैसी होनी चाहिए?:–

यह हर मर्द बता सकता है, लेकिन क्या मर्द को यह जानना ज़रूरी नहीं कि ख़ुद उसे कैसा होना चाहिए?

एक अच्छा मर्द और अच्छा शौहर वही होता है जो औरत की बड़ी से बड़ी ग़लती मॉफ़ करदे, जो हुक्म चलाने वाला नहीं बल्कि एक साथी और रक्षक बनकर रहे। जो रोटी, कपड़ा और मकान देकर एहसान न जताए बल्कि शुक्रगुज़ार हो। जो अपने घमण्ड के घोड़े पर सवार होकर औरत की ख़ुद्दारी को रौंद न डाले, जो बिना कहे उसे इज़्ज़त और मुहब्बत दे, जो अपनी मर्दानगी के नाम पर औरत की इज़्ज़ते–नफ़्स को कुचले नहीं, और जो घर की सेवा को सिर्फ़ औरत का फर्ज़ न माने, जो औरत के हर दुख दर्द में उसका साथी हो, वही एक अच्छा मर्द और अच्छा शौहर होता है।

औरत का भी यह फर्ज़ है कि वह अपने शौहर की वफ़ादार, उसकी इज़्ज़त करने वाली और उसकी बात मानने वाली हो, अगर शौहर किसी ग़लती के बिना भी उस पर ज़्यादती कर बैठे, तो वह सब्र से काम ले, लेकिन उसके ख़िलाफ़ कुछ सोचने तक का ख़्याल न लाए, जब कुछ बोलना चाहे तो उसकी ज़बान और कुछ लिखना चाहे तो उसका हाथ बग़ावत कर जाए। अगर कोई उसके शौहर के ख़िलाफ़ कुछ कह दे तो उसकी इज़्ज़त की ख़ातिर उससे लड़ जाए, क्योंकि मुहब्बत के कुछ उसूल होते हैं।

मुहब्बत क़ुर्बानी मांगती है, कभी रूह की, कभी जान की और कभी ख़वाहिशों की। अगर रिश्तों में ताल्लुक़ ख़त्म हो जाए, रिश्ते टूट भी जाएं तो भी मुहब्बत पर ख़ास फ़र्क नहीं पड़ता। जिस तरह यादें दिल और दिमाग़ पर काबिज़ रहती हैं, वैसे मुहब्बत भी दिल से आसानी से नहीं जाती, लेकिन अगर दिलों में फ़र्क़ आजाए तो फिर रिश्ते निभाए नहीं जाते, बल्कि घसीटे जाते हैं।

शीशा टूटे गुल मच जाए।
दिल टूटे आवाज़ न आए।।

❖❖❖

पृष्ठ ....37......का शेष

आदमी खा पीकर कपड़े पहन रहा था कि जिनों के बादशाह के दरबार में जाये कि इतने में जिनो का बादशाह अपने मंत्रियों और दरबारियों के साथ खुद उसके घर आ गया। उन्होंने झनझन जिन्नी को देखा वह बाँस पर चढ़ते उतरते बेदम हो रहा था, पसीने में लतपत। और घनघन जिन्नी कुत्ते की दुम सीधी करने में झुंझलाया हुआ था। बादशाह ने दोनों का हाल पूछा। दोनों ने कहा, ''हुजूर! आप ठीक कहते थे, हम भर पाये, यह आदमी वास्तव में ज्ञान और बुद्धि का पुतला है, पहले तो हमने इसे परेशान कर दिया, इसका सोना दूभर कर दिया, लेकिन फिर इसने कुछ पढ़ा, अपने ऊपर फूंका तो झट यह हुक्म दिया जो आप देख रहे हैं, वास्तव में आप सच कहते थे। अल्लाह ने आदमी को सबसे बढ़ कर बनाया है और उसे सबसे ज़्यादा अक़्ल दी है। अब खुदा के वास्ते इससे हमारा पीछा छुड़ाइये नहीं तो हम दोनों इसका हुक्म मानते मानते मर ही जायेंगे।''

बादशाह हँसा। उसने आदमी से कहा, ''भाई! तुम जीत गये, इन दोनों ने अपने घमण्ड की सजा पाई। अच्छा, अब तुमको तुम्हारे घर भेज दिया जायेगा।'' यह कह कर बादशाह ने आदमी को बहुत कुछ इनआम दिया और झनझन जिन्नी और घनघन जिन्नी को आदेश दिया कि इस आदमी को जहाँ से लाये हो वहीं छोड़ आओ।

दोनों जिनों ने बादशाह का आदेश सुना। सन्तोष का साँस लिया और मिनट भर में आदमी को इनआम की सामग्री के साथ उसके घर छोड़ गये। फिर कभी उन्होंने आदमी का विरोध करने का साहस न किया, साहस करना तो दूर वे तो अपनी जाति के लोगों को नसीहत करते थे कि भाई! इन्सान को अल्लाह ने सब से बढ़कर बनाया है, उससे कभी न भिड़ना।

❖❖❖

अमरूद

शालिनी शर्मा

भले ही कुछ लोग इसे साधारण फल की श्रेणी में रखते हों, पर यह फल गुणों का भंडार है। अमरूद स्वाद में तो लाजवाब होता ही है सेहत की दृष्टि से भी यह उपयोगी फल है। अध्ययनों से यह सिद्ध हुआ है कि यह फल हृदय और मस्तिष्क को शक्ति तो प्रदान करता ही है। साथ ही इसमें विटामिन ''सी'' की अच्छी मात्रा उपलब्ध होती है। अमरूद को संस्कृत में अमृतफल कहते हैं।

गुण व उपयोगः—

अमरूद बच्चों के लिए भी काफी पौष्टिक और संतुलित आहार है अमरूद से स्नायु—मण्डल, पाचन संस्थान, हृदय तथा मस्तिष्क को बल मिलता है।

अमरूद में कुछ आवश्यक पौष्टिक तत्व मौजूद होते है जो शरीर को स्वस्थ बनाये रखने के लिए बहुत आवश्यक हैं। इसमें जो मुख्य आवश्यक पौष्टिक तत्व मौजूद होते है वे इस प्रकार से हैंः— कार्बोहाइड्रेट 14.5 ग्राम, प्रोटीन 0.9 ग्राम, रेशा 5.2 ग्राम, वसा 0.3 ग्राम, कैल्शियम 20 मि0 ग्राम, फास्फोरस 42 मिली ग्राम, आयरन 1.4 मिली ग्राम, जल 81.7 ग्राम (प्रति 100 ग्राम में)।

1. कब्ज को दूर करने में अमरूद अचूक दवा का काम करता है जिन लोगों को कब्ज की शिकायत रहती है उन्हें तो अमरूद का सेवन अवश्य करना चाहिए। यह फल पेट को साफ करने वाला है।

यदि अमरूद को काट कर इसपर थोड़ा सा सेंधा नमक सोंठ व काली मिर्च छिड़ककर इसका सेवन करें तो पेट की गैस बदहजमी आदि पेट के विकार दूर हो जाते हैं।

2. अमरूद को यदि गरम रेत में भूनकर खाया जाए तो खाँसी जल्दी ठीक हो जाती है।

3. अमरूद के कोमल पत्ते भी गुणकारी होते है। जिन लोगों के मसूड़े और दांत कमजोर हैं उन्हें इस फल के नर्म व ताजे पत्ते चबाने चाहिए ऐसा करने से मसूड़े और दांत तो मजबूत होते ही हैं साथ ही मुँह के छालों की शिकायत भी दूर होती है।

4. अमरूद के पत्तों को उबाल कर इसके कुनकुने पानी से कुल्ला करने से दाँतों के दर्द में आराम पहुँचता है। अमरूद के पत्ते को पानी में उबालकर उसमे नमक डालकर ठंडा होने पर चेहरे पर लगाने से मुहाँसों से राहत मिलती है।

6. खाने के पहले खाया गया अमरूद अतिसार (दस्त) में लाभप्रद होता है जबकि खाने के बाद अमरूद खाने से पाचन क्रिया ठीक होती है (कब्ज में राहत मिलती है)।

7. अमरूद मलेरिया बवासीर पागलपन, शरीर और हाथ पैर में दाह, जलन, कृमि आदि रोगों में भी लाभ पहुँचता है।

8. अमरूद में विटामिन ''सी'' प्रचुर मात्रा में पाया जाता है जो दाँतों तथा मसूड़ों के रोगों, जोड़ो के दर्द, स्कर्वी, रक्तस्राव आदि रोगों में बहुत अधिक उपयोगी, होता है।

9. अमरूद खाते समय इस बात का विशेष ध्यान दें कि यह न ज्यादा कच्चा हो और न अधिक पका हो क्योंकि ऐसे अमरूद के सेवन से विभिन्न रोगों की आशंका बनी रहती है।

❖❖❖

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

अबू अब्दुर्रहमान नदवी

पेरिस के अंतिम समाचार पत्र विक्रेता अली अकबर को फ्रांस का सर्वोच्च सम्मानः—

पेरिस की गलियों से राष्ट्रपति भवन तक पहुंचे पाकिस्तानी मूल के अखबार विक्रेता अली अकबर को फ्रांस के सर्वोच्च नागरिक सम्मान से सम्मानित किया गया है। रावलपिंडी के 72 वर्षीय अली अकबर पिछले पांच दशकों से पेरिस के प्रसिद्ध सेंट—जर्मेन—दे—प्रे क्षेत्र में अखबार विक्रेता के रूप में जाने जाते हैं। उन्हें फ्रांस के सर्वोच्च सम्मान, *Lgiond Honneur* (लीजेनडहोनूर) से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान उन्हें फ्रांसीसी राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने एलेजे पैलेस में एक विशेष समारोह के दौरान प्रदान किया। अली अकबर का जन्म 1953 में रावलपिंडी में बेहद गरीबी में हुआ था। उन्होंने 12 साल की उम्र में स्कूल छोड़ दिया और कई तरह के शारीरिक श्रम वाले काम किए। उन्होंने अपनी कड़ी मेहनत से पढ़ना सीखा और अफगानिस्तान, ईरान और ग्रीस होते हुए 1973 में पेरिस पहुंचे। 1974 से वह पेरिस की सड़कों पर *Le Monde* और *Les Echos* जैसे प्रसिद्ध फ्रांसीसी अखबार बेच रहे हैं और अपनी अनूठी आवाज और मुस्कान से लोगों का दिल जीतते हैं। न्यूयॉर्क टाइम्स के अनुसार, अली अकबर को फ्रांस का अंतिम समाचार पत्र विक्रेता माना जाता है, यह पेशा 1960 के दशक में अपने चरम पर था लेकिन अब विलुप्त होता जा रहा है, लेकिन पेरिस के स्थानीय लोग उनसे बेहद प्यार करते हैं।

मदीना मुनव्वर को सबसे स्वस्थ शहर का दर्जा दिया गयाः—

सऊदी प्रेस एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, विश्व स्वास्थ्य संगठन *(WHO)* ने मदीना मुनव्वर की एक स्वस्थ शहर के रूप में मान्यता को नवीनीकृत कर दिया है। इस्लाम के इस दूसरे सबसे पवित्र स्थल को 80 अंक मिले हैं। मदीना क्षेत्र के गवर्नर प्रिंस सलमान बिन सुल्तान ने कल एक समारोह में स्वास्थ्य मंत्री फहद अल—जलाजील से *WHO* का अनुमोदन प्रमाणपत्र प्राप्त किया। प्रिंस सलमान ने कहा कि मदीना मुनव्वर की मान्यता का नवीनीकरण शहरी केंद्रों में राज्य के लोगों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए नेतृत्व की प्रतिबद्धता का प्रतीक है। उन्होंने क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मदीना को एक अग्रणी विकास मॉडल के रूप में बदलने पर जोर दिया, जो राज्य के विजन 2030 के लक्ष्यों के अनुरूप है। विश्व स्वास्थ्य संगठन *(WHO)* की मंजूरी प्राप्त करने के लिए, किसी शहर को पार्क, पैदल चलने की जगह और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों सहित 80 मानदंडों को पूरा करना, और स्कूलों के माध्यम से स्वास्थ्य को बढ़ावा देना होता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सऊदी अरब के 14 अन्य स्वस्थ शहरों को भी मान्यता दी है। लीडर्स एम ई एन ए पत्रिका के अनुसार, इनमें ताइफ, तबूक, अल—दरियाह, उनैजाह, जलाजिल, अल—मंदक, अलजमूम, रियाज अल खबरा, और शरुरा शामिल हैं।

इससे पहले, मदीना मुनव्वर को 2019 में पहली बार डब्ल्यूएचओ हेल्थ सिटी पुरस्कार मिला था, जबकि 2025 में इस पुरस्कार का नवीनीकरण ''स्वस्थ शहरों'' के रूप में प्रमाणित शहरों की संख्या बढ़ाने की सऊदी अरब की व्यापक रणनीति का हिस्सा है।

यूरोप में एक नया देश बनाया गयाः—

यूरोप में एक और नया देश उभरा है, जिसकी आबादी महज 400 लोगों की है, इसका अपना झंडा, मंत्रिमंडल और मुद्रा है। यूरोप में एक 20 वर्षीय व्यक्ति ने एक नए देश की स्थापना की घोषणा की है, जो वेटिकन सिटी के बाद दुनिया का दूसरा सबसे छोटा देश है। इसकी आबादी सिर्फ 400 लोगों की है और इसका अपना झंडा, मुद्रा, पासपोर्ट और मंत्रिमंडल है। देश को ''फ्री रिपब्लिक ऑफ वर्डेस'' नाम दिया गया है। अमेरिकी अखबार न्यूयॉर्क पोस्ट के अनुसार, इस देश की खोज 2019 में 20 वर्षीय ऑस्ट्रेलियाई किशोर डेंटल जैक्सन ने की थी, जो पहले किसी अन्य देश के नियंत्रण में नहीं था। जिसके बाद युवक 400 नागरिकों को लाया, जिन्हें पॉकेट थ्री कहा जाता है।

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳- ٹیگور مارگ
لکھنؤ- ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक: 22/08/2025 ______ تاریخ

अहले ख़ैर हज़रात से !

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा, हज़रत मौलाना सैय्यद बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी, दीनी, तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंजाम दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों को सीने से लगाए हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था यानी नये ज़माने में इस्लाम की प्रभावी और सही व्याख्या, दीन और दुनिया तथा इल्म और रूहानियत को यकजा करने की कोशिश, दीन से दूरी और नफ़रत को ख़त्म करने के प्रयास, इस्लाम पर विश्वास और इस्लामी उलूम की बलन्दी और विशेषता के ऐलान, दीने हक़ से वफ़ादारी और शरीअ़त पर मज़बूती से जमने के सिद्धान्तों पर कायम है।

आप से हमारी दरख़्वास्त है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफ़ादियत, (उपयोगिता) को समझते हुए पूरी फ़य्याज़ी और फ़राख़दिली और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर मदद फ़रमाएं कि हिन्दुस्तान में दीन के क़िलों की हिफ़ाज़त की इससे बेहतर कोई शक्ल और इससे ज़्यादा मज़बूत कोई सदक़–ए–जारिया नहीं।

लिहाज़ा आप हज़रात से गुज़ारिश है कि अपने सदक़ात अतियात, चेक या ड्राफ़्ट के ज़रिये और ऑन लाइन नदवतुल उलमा के निम्नलिखित एकाउन्ट में ट्रान्सफ़र फ़रमायें, ऐसे नाज़ुक और मुश्किल हालात में आपका सहयोग बहुत ही अहमियत रखता है। अल्लाह तआला हम सबकी कोशिशों को क़ुबूल फ़रमाए और उनको हमारे लिए आख़िरत का ज़ख़ीरा बनाए। आमीन।

मौलाना सैयद अम्मार अब्दुल अली हसनी नदवी
नाजिरे आ़म नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW- IFSC: SBIN0000125
ONLINE DONATION LINK: https://www.nadwa.in/donation

SCAN HERE TO VISIT THE WEBSITE FOR DONATION

ZAKAT — NADWATUL ULAMA

ATIYA — NADWATUL ULAMA

BUILDING — NADWATUL ULAMA

UPI करते समय रिमार्क में मद (ज़कात/अतिया/तअ़मीर) अवश्य डालें।

बरा–ए–करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए न0 08736833376 पर इत्तिला ज़रूर करें।
नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को Section 80G income Tax act 1961के तहत छूट प्राप्त होगी।
Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/Website: www.nadwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

RNI No. UPHIN/2002/07945
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2024 To 2026
Dispatch Date :1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI
Vol. 24 - Issue 07

Office Timing : 7:30 AM To 1:15PM
Tel.:(0522) 2740406
ISSN No. : 2582-4007
http://sachcha-rahi.nadwa.in
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com

R.K. Clinic Research CENTRE

R. K. CLINIC
& RESEARCH CENTRE
Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.

विशेषज्ञ

पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्ड्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग

24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE

G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983

Printed & Published by Mohammad Taha Athar, Tagore Marg, Badshah Bagh, Lukcnow - 7
on behalf of Majlis-e-Sahafat-wa-Nashriyat at Kakori Offset Press, BN Varma Road, Lucknow - 3